प्रकाशक :

अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ

जोधपुर

शाखा कार्यालय

नेहरू गेट बाहर, ब्यावर (राजस्थान)

✆: (01462) 251216, 257699, 250328

चन्द्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र

(शुद्ध मूल पाठ, कठिन शब्दार्थ, भावार्थ एवं विवेचन सहित)

आवरण सौजन्य

विद्या बाल मंडली सोसायटी, मेरठ

अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ

श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ साहित्य रत्न माला का १३३ वाँ रत्न

चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र
सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र

सम्पादक
नेमीचन्द बांठिया
पारसमल चण्डालिया

प्रकाशक
श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर
शाखा-नेहरू गेट बाहर, ब्यावर-305901
(01462) 251216, 257699 Fax No. 250328

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्रव्य सहायक

उदारमना श्रीमान् सेठ जशवंतलाल भाई शाह, बम्बई

प्राप्ति स्थान

१. श्री अ. भा. सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, सिटी पुलिस, **जोधपुर** ☎ 2626145
२. शाखा-अ. भा. सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, नेहरू गेट बाहर, **ब्यावर** ☎ 251216
३. महाराष्ट्र शाखा-माणके कंपाउंड, दूसरी मंजिल आंबेड़कर पुतले के बाजू में, **मनमाड़**
४. श्री जशवन्तभाई शाह एदुन बिल्डिंग पहली धोबी तलावलेन पो० बॉ० नं० 2217, **बम्बई-2**
५. श्रीमान् हस्तीमल जी किशनलालजी जैन प्रीतम हाऊ० कॉ० सोसा० ब्लॉक नं० १० स्टेट बैंक के सामने, **मालेगांव (नासिक)** ☎ 252097
६. श्री एच. आर. डोशी जी-३६ बस्ती नारनौल अजमेरी गेट, **दिल्ली-६** ☎ 23233521
७. श्री अशोकजी एस. छाजेड़, १२१ महावीर क्लॉथ मार्केट, **अहमदाबाद** ☎ 5461234
८. श्री सुधर्म सेवा समिति भगवान् महावीर मार्ग, **बुलडाणा**
९. श्री श्रुतज्ञान स्वाध्याय समिति सांगानेरी गेट, **भीलवाड़ा** ☎ 236108
१०. श्री सुधर्म जैन आराधना भवन २४ ग्रीन पार्क कॉलोनी साउथ तुकोगंज, **इन्दौर**
११. श्री विद्या प्रकाशन मन्दिर, ट्रांसपोर्ट नगर, **मेरठ** (उ. प्र.)
१२. श्री अमरचन्दजी छाजेड़, १०३ वाल टेक्स रोड़, **चैन्नई** ☎ 25357775
१३. श्री संतोषकुमार बोथरा वर्द्धमान स्वर्ण अलंकार ३६४, शॉपिंग सेन्टर, **कोटा** ☎ 2360950

मूल्य : २०-००

द्वितीय आवृत्ति
१०००

वीर संवत् २५३३
विक्रम संवत् २०६४
सितम्बर २००७

मुद्रक - स्वास्तिक प्रिन्टर्स प्रेम भवन हाथी भाटा, अजमेर ☎ 2423295

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

निवेदन

जैन आगम साहित्य गहन, गूढ़ एवं सूक्ष्म हैं इसमें आध्यात्मिकता की उत्कर्ष भूमिका तक पहुँचाने के साधनों का वर्णन मिलता है, तदनुसार इसकी विषय सामग्री भी विशाल एवं तलछट तक पहुँच कर विभिन्न तथ्यों को उजागर करने वाली है। इस रत्नाकर में अनेक प्रकार के रत्न समाहित हैं, जिसके तल को स्पर्श करने पर अनेक प्रकार के रत्न प्राप्त हो सकते हैं। इसमें जहाँ एक ओर जीव-अजीव, लोक-अलोक, आचार विचार और इससे सम्बन्ध रखने वाले पुण्य, पाप, आस्रव, बंध आदि के स्वरूप का निरूपण किया गया है, तो दूसरी ओर संसार के समस्त बन्धनों से मुक्त होने पर भी चिंतन किया गया है। इसके अलावा धर्मास्तिकाय आदि जैसे अरूपी लोक अलोक व्यापी द्रव्यों, ज्योतिष, भूगोल-खगोल-गणित आदि अनेक विषयों पर भी इस दर्शन में गहन चिंतन-मनन किया गया है। इस प्रकार संसार का ऐसा कोई भी तत्त्व नहीं जिसका निरूपण इस दर्शन में नहीं मिलता है। जहाँ तक इस दर्शन में निरूपित विषयों की प्रामाणिकता का प्रश्न है, वे सम्पूर्ण विषय सर्वज्ञ सर्वदर्शी तीर्थंकर प्रभु अथवा श्रुत केवली कथित हैं। श्रुतकेवली रचित आगम साहित्य भी उतना ही प्रामाणिक माना जाता जितना सर्वज्ञ कथित, क्योंकि श्रुतधर केवली अपनी कमनीय-कल्पना का संमिश्रण अपने आगम साहित्य में नहीं करते, वे तो केवल भाव को भाषा के परिधान में समलंकृत करते हैं। अत एव यह पूर्ण खातरी के साथ कहा जा सकता है कि जिन-जिन विषयों का इस दर्शन में प्रतिपादन हुआ है वह शतप्रतिशत प्रामाणिक ही है।

जैन आगम साहित्य का समय-समय पर विभिन्न रूप में वर्गीकरण हुआ है। सर्व प्रथम इसे अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य के रूप में प्रतिष्ठापित किया गया। अंग-प्रविष्ट में उन आगमों को लिया गया, जिनका निर्यूहण गणधर भगवन्तों द्वारा किया है और अंग-बाह्य में स्थविर श्रुतकेवली रचित आगम साहित्य को। समवायांग और अनुयोग द्वार सूत्र में आगम साहित्य का केवल द्वादशांगी के रूप में निरूपण हुआ है। इसके अलावा आगम साहित्य का उसकी विषय सामग्री के अनुसार (द्रव्यानुयोग, चरणानुयोग, गणितानुयोग एवं धर्मकथानुयोग में) भी वर्गीकरण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हुआ है। सबसे अर्वाचीन रूप जो वर्तमान बत्तीस आगम साहित्य का है वह है - ग्यारह अंग, बारह उपांग, चार मूल, चार छेद और बत्तीसवाँ आवश्यक सूत्र।

प्रस्तुत चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र और सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र छट्ठा एवं सातवाँ उपांग हैं। चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र कालिक सूत्र है। इसमें २० प्राभृत हैं। इसका विषय गणितानुयोग है। सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र उत्कालिक सूत्र है। इसमें भी २० प्राभृत हैं। इन उपांगों में खगोल-गणित नक्षत्र, ज्योतिष आदि विषयों की मुख्य रूप से चर्चा हुई है। इन उपांगों के बारे में उल्लेख मिलता है कि निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहु ने प्रथम बार निर्युक्ति की रचना की थी, किन्तु काल दोष से नष्ट हो जाने अथवा अन्य किसी कारण से उपलब्ध न होने पर आचार्य मलयगिरि ने इन पर टीका लिखी, उन्होंने अपनी टीका में लिखा है 'भद्रबाहुसूरिकृत निर्युक्ति के नष्ट हो जाने से मैं केवल मूल सूत्र की व्याख्या करूँगा।'

जैन आगम साहित्य में चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, ज्योतिष्कचक्र आदि का व्यवस्थित एवं विस्तृत वर्णन जैसा इन उपांगों में उपलब्ध है वैसा अन्यत्र कही नहीं है, बावजूद इसके इनका अध्ययन सामान्य पाठकों के लिए वर्जित है।

इनके अर्न्तगत जहाँ नक्षत्रों का वर्णन है वहाँ भोजन सम्बन्धी जो पाठ है, वे अमुक अभक्ष्य पदार्थों के भक्षण से सम्बन्ध रखने वाले हैं, जो भगवद् वाणी से कदापि मेल नहीं खाते हैं। वीतराग वाणी में इस प्रकार के अभक्ष्य के भक्षण रूप प्ररूपणा कदापि नहीं हो सकती है। अत एव सामान्य पाठक भम्रित न हो, उनकी श्रद्धा डांवाडोल न हो। अत एव पूर्वाचार्यों ने उनके लिए इनके पढ़ने का निषेध किया है। मात्र बहुश्रुत गीतार्थ आगम के तलस्पर्शी ज्ञाताओं को ही इन्हें पढ़ने की आज्ञा दी, वे ही इन स्थलों का अपने विशिष्ट क्षयोपशम के अनुसार उचित, आगे पीछे का संदर्भ जोड़कर एवं अभक्ष पदार्थ का वनस्पति परक अर्थ संगत बिठा सकते हैं। यही कारण है कि इन दोनों सूत्रों का मूल पाठ ही संघ द्वारा प्रकाशित अनंगपविट्ठ सुत्ताणि से यहाँ उद्धृत कर प्रकाशित करवाया जा रहा है।

चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र के दसवें पाहुड (प्राभृत) के सतरहवें पाहुडपाहुड (प्रति प्राभृत) में नक्षत्र में क्या भोजन करना विषयक पाठ है। यहाँ **'मंसं'** शब्द आया है। इस विषयक पूज्य ज्ञानी गुरु भगवंतों से जानकारी प्राप्त हुई है कि पूज्य बहुश्रुत गीतार्थ पं. र. श्री समर्थमलजी म. सा. की धारणा इस प्रकार थी -

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

"इस पाठ के आगे **'एगे एवमाइक्खंति वयं पुण एवं वयामो'** करके सूत्रकार का अपना मंतव्य दिखाने वाला पाठ कहीं छूट गया लगता है। सूत्रकार के किसी वचन में मांस भक्षण प्रेरक कोई मिथ्या उपदेश संभव नहीं है।"

निघण्टु आदि शब्दकोष में बहुत से मंस सूचक शब्दों के वनस्पति परक अर्थ किये हैं यहाँ भी उसी प्रकार का अर्थ संभव है। क्योंकि पंचेन्द्रिय घात और मांस का सेवन नरक गति में जाने का कारण होने से तीर्थंकर प्रभु ऐसी प्ररूपणा नहीं कर सकते हैं।

सूर्यप्रज्ञप्ति एवं चन्द्रप्रज्ञप्ति दोनों सूत्रों के पाठ कुछ श्लोकों के अलावा प्रायः समान है। इसका समाधान पूज्य स्वर्गीय गुरुदेव बहुश्रुत पण्डित समर्थमलजी म. सा. ने इस प्रकार फरमाया कि - जैसे सूर्यप्रज्ञप्ति की दो नकले पड़ी हों, उसमें से एकाध पाना चन्द्रप्रज्ञप्ति का शामिल हो गया हो, उस पन्ने को देख कर सूर्य प्रज्ञप्ति पर ही चन्द्र प्रज्ञप्ति नाम लगा दिया हो, फिर नकलें होकर प्रचलित हो गई हो। अथवा शास्त्र लिपिबद्ध करते समय इन दोनों सूत्रों को भिन्न-भिन्न साधु द्वारा लिपि बद्ध करते हुए एक तरफ एक सूत्र और दूसरी तरफ दूसरे सूत्र के बदले भ्रांति से उसी को लिपि बद्ध कर दिया हो अथवा दीमक आदि पाने को खा जाने से दूसरे सूत्र की भ्रांति में दूसरे का ही लगा दिया हो, इत्यादि कारण हो सकते हैं वस्तुतः यह विशेषज्ञों के खोज का विषय है।

इन सूत्रों में मंडल गति संख्या, सूर्य का तिर्यक् परिभ्रमण, प्रकाश्य क्षेत्र परिमाण, प्रकाश संस्थान, लेश्या प्रतिघात, ओजःसंस्थिति, सूर्यावरक उदय संस्थिति, पौरुषी छाया प्रमाण योगचररुप, संवत्सरों के आदि और अंत, संवत्सर के भेद, चन्द्र की वृद्धि अपवृद्धि, ज्योत्सना प्रमाण, शीघ्र गति निर्णय, ज्योत्सना लक्षण, च्यवन और उपपात, चन्द्रसूर्य आदि की ऊंचाई, उनका परिमाण, नक्षत्रों एवं अमुक नक्षत्र में अमुक भोजन ग्रहण करने आदि का अधिकार। इनकी रचना गद्य-पद्य दोनों के मिश्रण से हुई है। इनमें एक अध्ययन, २० प्राभृत और उपलब्ध मूल पाठ २२०० श्लोक परिणाम है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संघ का आगम प्रकाशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। इस आगम प्रकाशन के कार्य में **धर्म प्राण समाज रत्न तत्त्वज्ञ सुश्रावक श्री जशवंतलाल भाई शाह एवं श्राविका रत्न श्रीमती मंगला बहन शाह, बम्बई** की गहन रुचि है। आपकी भावना है कि संघ द्वारा जितने भी आगम प्रकाशित हुए हैं वे अर्द्ध मूल्य में ही बिक्री के लिए पाठकों को उपलब्ध हों। इसके लिए उन्होंने सम्पूर्ण आर्थिक सहयोग प्रदान करने की आज्ञा प्रदान की है। तदनुसार प्रस्तुत आगम पाठकों को उपलब्ध कराया जा रहा है, संघ एवं पाठक वर्ग आपके इस सहयोग के लिए आभारी हैं।

आदरणीय शाह साहब तत्त्वज्ञ एवं आगमों के अच्छे ज्ञाता हैं। आप का अधिकांश समय धर्म साधना आराधना में बीतता है। प्रसन्नता एवं गर्व तो इस बात का है कि आप स्वयं तो आगमों का पठन-पाठन करते ही हैं, पर आपके सम्पर्क में आने वाले चतुर्विध संघ के सदस्यों को भी आगम की वाचनादि देकर जिनशासन की खूब प्रभावना करते हैं। आज के इस हीयमान युग में आप जैसे तत्त्वज्ञ श्रावक रत्न का मिलना जिनशासन के लिए गौरव की बात है। आपकी धर्म सहायिका **श्रीमती मंगलाबहन शाह** एवं पुत्र रत्न **मयंकभाई शाह** एवं **श्रेयांसभाई शाह** भी आपके पद चिह्नों पर चलने वाले हैं। आप सभी को आगमों एवं थोकड़ों का गहन अभ्यास है। आपके धार्मिक जीवन को देख कर प्रमोद होता है। आप चिरायु हों एवं शासन की प्रभावना करते रहें। **चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र की प्रथम आवृत्ति** का प्रकाशन सितम्बर २००६ में हुआ था। जो अल्प समय में ही अप्राप्य हो गई। अब इसकी द्वितीय आवृत्ति का प्रकाशन **शाह परिवार, मुम्बई** की ओर से किया जा रहा है। जैसा कि पाठक बन्धुओं को मालूम ही है कि वर्तमान में कागज एवं मुद्रण सामग्री के मूल्य में काफी वृद्धि हो चुकी है। फिर भी **श्रीमान् सेठ जशवंतलाल भाई शाह, मुम्बई** के आर्थिक सहयोग से इसका मूल्य मात्र **रु. २०) बीस रुपया** ही रखा गया है जो कि वर्तमान् परिपेक्ष्य में ज्यादा नहीं है। पाठक बन्धु इस द्वितीय आवृत्ति का अधिक से अधिक लाभ उठाएंगे।

इसी शुभ भावना के साथ!

ब्यावर (राज.)
दिनांक: २०-९-२००७

संघ सेवक
नेमीचन्द बांठिया
अ. भा. सु. जैन सं. रक्षक संघ, **जोधपुर**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अस्वाध्याय

निम्नलिखित बत्तीस कारण टालकर स्वाध्याय करना चाहिये।

आकाश सम्बन्धी १० अस्वाध्याय	काल मर्यादा
१. बड़ा तारा टूटे तो-	एक प्रहर
२. दिशा-दाह *	जब तक रहे
३. अकाल में मेघ गर्जना हो तो-	दो प्रहर
४. अकाल में बिजली चमके तो-	एक प्रहर
५. बिजली कड़के तो-	आठ प्रहर
६. शुक्ल पक्ष की १, २, ३ की रात-	प्रहर रात्रि तक
७. आकाश में यक्ष का चिह्न हो-	जब तक दिखाई दे
८-९. काली और सफेद धूंअर-	जब तक रहे
१०. आकाश मंडल धूलि से आच्छादित हो-	जब तक रहे
औदारिक सम्बन्धी १० अस्वाध्याय	
११-१३. हड्डी, रक्त और मांस,	ये तिर्यंच के ६० हाथ के भीतर हो। मनुष्य के हो, तो १०० हाथ के भीतर हो। मनुष्य की हड्डी यदि जली या धुली न हो, तो १२ वर्ष तक।
१४. अशुचि की दुर्गंध आवे या दिखाई दे-	तब तक
१५. श्मशान भूमि-	सौ हाथ से कम दूर हो, तो।
१६. चन्द्र ग्रहण-	खंड ग्रहण में ८ प्रहर, पूर्ण हो तो १२ प्रहर
(चन्द्र ग्रहण जिस रात्रि में लगा हो उस रात्रि के प्रारम्भ से ही अस्वाध्याय गिनना चाहिये।)	
१७. सूर्य ग्रहण-	खंड ग्रहण में १२ प्रहर, पूर्ण हो तो १६ प्रहर
(सूर्य ग्रहण जिस दिन में कभी भी लगे उस दिन के प्रारंभ से ही उसका अस्वाध्याय गिनना चाहिये।)	
१८. राजा का अवसान होने पर,	जब तक नया राजा घोषित न हो
१९. युद्ध स्थान के निकट	जब तक युद्ध चले
२०. उपाश्रय में पंचेन्द्रिय का शव पड़ा हो,	जब तक पड़ा रहे

(सीमा तिर्यंच पंचेन्द्रिय के लिए ६० हाथ, मनुष्य के लिए १०० हाथ। उपाश्रय बड़ा होने पर इतनी सीमा के बाद उपाश्रय में भी अस्वाध्याय नहीं होता। उपाश्रय की सीमा के बाहर हो तो यदि दुर्गन्ध न आवे या दिखाई न देवे तो अस्वाध्याय नहीं होता।)

२१-२४. आषाढ़, आश्विन, कार्तिक और चैत्र की पूर्णिमा	दिन रात
२५-२८. इन पूर्णिमाओं के बाद की प्रतिपदा-	दिन रात
२९-३२. प्रातः, मध्याह्न, संध्या और अर्द्ध रात्रि- इन चार सन्धिकालों में-	१-१ मुहूर्त्त

उपरोक्त अस्वाध्याय को टालकर स्वाध्याय करना चाहिए। खुले मुंह नहीं बोलना तथा सामायिक, पौषध में दीपक के उजाले में नहीं वांचना चाहिए।

नोट - नक्षत्र २८ होते हैं उनमें से आर्द्रा नक्षत्र से स्वाति नक्षत्र तक नौ नक्षत्र वर्षा के गिने गये हैं। इनमें होने वाली मेघ की गर्जना और बिजली का चमकना स्वाभाविक है। अतः इसका अस्वाध्याय नहीं गिना गया है।

---

* आकाश में किसी दिशा में नगर जलने या अग्नि की लपटें उठने जैसा दिखाई दे और प्रकाश हो तथा नीचे अंधकार हो, वह दिशा-दाह है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विषयानुक्रमणिका

चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र

क्रं.	विषय	पृष्ठ
१.	पढमं पाहुडं	१-१५
	१. पढमस्स पाहुडस्स पढमं पाहुडपाहुडं	१-४
	२. पढमस्स पाहुडस्स बीयं पाहुडपाहुडं	४-५
	३. पढमस्स पाहुडस्स तइयं पाहुडपाहुडं	६
	४. पढमस्स पाहुडस्स चउत्थं पाहुडपाहुडं	६-८
	५. पढमस्स पाहुडस्स पंचमं पाहुडपाहुडं	९-१०
	६. पढमस्स पाहुडस्स छट्ठं पाहुडपाहुडं	१०-१२
	७. पढमस्स पाहुडस्स सत्तमं पाहुडपाहुडं	१२
	८. पढमस्स पाहुडस्स अट्ठमं पाहुडपाहुडं	१२-१५
२.	बीयं पाहुडं	१५-२०
	१. बिइयस्स पाहुडस्स पढमं पाहुडपाहुडं	१५-१६
	२. बिइयस्स पाहुडस्स बिइयं पाहुडपाहुडं	१६-१७
	३. बिइयस्स पाहुडस्स तइयं पाहुडपाहुडं	१७-२०
३.	तइयं पाहुडं	२०-२१
४.	चउत्थं पाहुडं	२१-२३
५.	पंचमं पाहुडं	२३-२४
६.	छट्ठं पाहुडं	२४-२६
७.	सत्तमं पाहुडं	२६
८.	अट्ठमं पाहुडं	२६-३०
९.	णवमं पाहुडं	३०-३३
१०.	दसमं पाहुडं	३३-५६
	१. दसमस्स पाहुडस्स पढमं पाहुडपाहुडं	३३
	२. दसमस्स पाहुडस्स बिइयं पाहुडपाहुडं	३३-३५
	३. दसमस्स पाहुडस्स तइयं पाहुडपाहुडं	३५
	४. दसमस्स पाहुडस्स चउत्थं पाहुडपाहुडं	३५-३६
	५. दसमस्स पाहुडस्स पंचमं पाहुडपाहुडं	३७

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्रं.	विषय	पृष्ठ
	६. दसमस्स पाहुडस्स छट्ठं पाहुडपाहुडं	३७-३९
	७. दसमस्स पाहुडस्स सत्तमं पाहुडपाहुडं	३९-४०
	८. दसमस्स पाहुडस्स अट्ठमं पाहुडपाहुडं	४०
	९. दसमस्स पाहुडस्स णवमं पाहुडपाहुडं	४०
	१०. दसमस्स पाहुडस्स दसमं पाहुडपाहुडं	४१-४२
	११. दसमस्स पाहुडस्स एक्कारसमं पाहुडपाहुडं	४२-४३
	१२. दसमस्स पाहुडस्स बारसमं पाहुडपाहुडं	४४
	१३. दसमस्स पाहुडस्स तेरसमं पाहुडपाहुडं	४४
	१४. दसमस्स पाहुडस्स चउद्दसमं पाहुडपाहुडं	४४
	१५. दसमस्स पाहुडस्स पण्णरसमं पाहुडपाहुडं	४५
	१६. दसमस्स पाहुडस्स सोलसं पाहुडपाहुडं	४५
	१७. दसमस्स पाहुडस्स सत्तरसमं पाहुडपाहुडं	४५-४६
	१८. दसमस्स पाहुडस्स अट्ठारसमं पाहुडपाहुडं	४६
	१९. दसमस्स पाहुडस्स एगूणवीसइमं पाहुडपाहुडं	४६
	२०. दसमस्स पाहुडस्स वीसइमं पाहुडपाहुडं	४७
	२१. दसमस्स पाहुडस्स एक्कवीसइमं पाहुडपाहुडं	४७-४९
	२२. दसमस्स पाहुडस्स बावीसइमं पाहुडपाहुडं	४९-५६
११.	**एक्कारसमं पाहुडं**	५६-५८
१२.	**बारसमं पाहुडं**	५८-६२
१३.	**तेरसमं पाहुडं**	६३-६५
१४.	**चोद्दसमं पाहुडं**	६५-६६
१५.	**पण्णरसमं पाहुडं**	६६-६८
१६.	**सोलसमं पाहुडं**	६९
१७.	**सत्तरसमं पाहुडं**	६९
१८.	**अट्ठारसमं पाहुडं**	६९-७३
१९.	**एगूणवीसइमं पाहुडं**	७४-८०
२०.	**वीसइमं पाहुडं**	८०-८५
	सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र	
१.	**१-२० पाहुडं**	८६-८७

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चंदपण्णत्ती

पढमं पाहुडं

जयइ णवणलिणकुवलयवियसियसयवत्तपत्तलदलच्छो। वीरो गयंदमयगलसललिय-गयविक्कमो भयवं ॥ १ ॥ णमिऊण सुरअसुरगरुलभुयगपरिवंदिए गयकिलेसे। अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाय सव्वसाहू य ॥ २ ॥ फुडवियडपागडत्थं वुच्छं पुव्व-सुयसारणीसंदं। सुहुमगणिणोवइट्ठं जोइसगणरायपण्णत्तिं ॥ ३ ॥ णामेण इंदभूइत्ति गोयमो वंदिऊण तिविहेणं। पुच्छइ जिणवरवसहं जोइसगणरायपण्णत्तिं ॥४॥ कइ मंडलाइ वच्चइ १, तिरिच्छा किं च गच्छइ २। ओभासइ केवइयं ३ सेयाई किं ते संठिई ४ ॥ ५ ॥ कहिं पडिहया लेसा ५ कहिं ते ओयसंठिई ६। के सूरियं वर-यए ७ कहं ते उदयसंठिई ८ ॥ ६ ॥ कहं कट्ठा पोरिसिच्छाया ९ जोगे किं ते व आहिए १०। किं ते संवच्छरेणाई ११, कइ संवच्छराइ य १२ ॥ ७ ॥ कहं चंद-मसो वुड्ढी १३, कया ते दोसिणा बहू १४। केइ सिग्घगई वुत्ते १५, कहं दोसिण-लक्खणं १६ ॥ ८ ॥ चयगोववाय १७ उच्चत्ते १८ सूरिया कइ आहिया १९। अणुभावे के व संवुत्ते २०, एवमेयाइं वीसई ॥ ९ ॥ वड्ढोवड्ढी मुहुत्ताणं १, अद्ध-मंडलसंठिई २। के ते चिण्णं परियरइ ३, अंतरं किं चरंति य ४ ॥१०॥ उग्गा-हइ केवइयं ५, केवइयं च विकंपइ ६। मंडलाण य संठाणे ७, विक्खंभो ८ अट्ठ पाहुडा ॥ ११ ॥ छप्पंच य सत्तेव य अट्ठ तिण्णि य हवंति पडिवत्ती। पढमस्स पाहुडस्स हवंति एयाउ पडिवत्ती ॥१२॥ पडिवत्तीओ उदए, तहा अत्थमणेसु य। भियवाए कण्णकला, मुहुत्ताण गईइ य ॥ १३ ॥ णिक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगईइ य। चुलसीइसयं पुरिसाणं, तेसिं च पडिवत्तीओ ॥ १४ ॥ उदयम्मि अट्ठ भणिया भेयग्घाए दुवे य पडिवत्ती। चत्तारि मुहुत्तगईए हुंति तइयम्मि पडिवत्ती ॥१५॥ आवलिय १ मुहुत्तग्गे २, एवंभागा य ३ जोगस्सा ४। कुलाइं ५ पुण्णमासी ६ य, सण्णिवाए ७ य संठिई ८ ॥ १६ ॥ तार(य)ग्गं च ९ णेया य १० चंदमग्गत्ति ११ यावरे। देवयाण य अज्झयणे १२, मुहुत्ताणं णामया इय १३ ॥ १७॥ दिवसा राइ वुत्ता य १४, तिहि १५ गोत्ता १६ भोयणाणि १७ य। आइच्चवार १८ मासा १९ य, पंच संवच्छरा इय २० ॥१८॥ जोइसस्स य दाराइं २१, णक्खत्तविजए विय २२। दसमे पाहुडे एए, बावीसं पाहुडपाहुडा ॥ १९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला णामं णयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा पमुइय-जणजाणवया'''पासादीया ४ ॥ १ ॥ तीसे णं मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तर-पुरत्थिमे दिसीभाए माणिभद्दे णामं चेइए होत्था वण्णओ ॥२॥ तीसे णं मिहिलाए णयरीए जियसत्तू णामं राया होत्था वण्णओ ॥ ३ ॥ तस्स णं जियसत्तुस्स रण्णो धारिणी णामं देवी होत्था वण्णओ ॥४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं तम्मि चेइए सामी समोसढे, परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया जाव राया जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहणारायसंघयणे जाव एवं वयासी–ता कहं ते वड्ढोवड्ढी मुहुत्ताणं आहितेति वएज्जा ? ता अट्ठएगूणवीसे मुहुत्तसए सत्तावीसं च सट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वएज्जा ॥ ६ ॥ ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ एस णं अद्धा केवइयं राइंदियग्गेणं आहितेति वएज्जा ? ता तिण्णि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गेणं आहितेति वएज्जा ॥ ७ ॥ ता एयाए अद्धाए सूरिए कइ मंडलाइं चरइ, कइ मंडलाइं दुक्खुत्तो चरइ, कइ मंडलाइं एगक्खुत्तो चरइ ? ता चुलसीयं मंडलसयं चरइ, बासीइ मंडलसयं दुक्खुत्तो चरइ, तंजहा–णिक्खममाणे चेव पविसमाणे चेव, दुवे य खलु मंडलाइं सइं चरइ, तंजहा—सव्वब्भंतरं चेव मंडलं सव्वबाहिरं चेव मंडलं ॥ ८ ॥ जइ खलु तस्सेव आइच्चस्स संवच्छरस्स सयं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ सइं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ सयं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ सइं दुवालस-मुहुत्ता राई भवइ, पढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई, अत्थि दुवालसमुहुत्ता राई, णत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, तत्थ णं कं हेउं वएज्जा ? ता अयण्णं जंबूदीवे २ सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव विसेसा-हिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ दो २ एगट्ठिभागमुहुत्ते एगमेगे मंडले दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे २ रयणिक्खेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरमंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं तिण्णिछावट्ठएगट्ठिभागमुहुत्ते सए दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढित्ता रयणिक्खेत्तस्स अभिवुड्ढित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। एवं खलु एएणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतरओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ दो दो एगट्ठिभागमुहुत्ते एगमेगे मंडले रयणिखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं तिण्णिछावट्ठे एगट्ठिभागमुहुत्तसए रयणिखेत्तस्स णिवुड्ढित्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दुच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे, इइ खलु तस्सेवं आइच्चस्स संवच्छरस्स सइं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, सयं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सयं दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, पढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई, अत्थि दुवालसमुहुत्ता राई, णत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, णण्णत्थ राइंदियाणं वड्ढोवड्ढीए मुहुत्ताण वा चओवचएणं, णण्णत्थ वा अणुवायगईए० गाहाओ भाणियव्वाओ ॥९॥ **पढमस्स पाहुडस्स पढमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥**

ता कहं ते अद्धमंडलसंठिई आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमा दुविहा अद्धमंडलसंठिई पण्णत्ता, तंजहा—दाहिणा चेव अद्धमंडलसंठिई उत्तरा चेव अद्धमंडलसंठिई । ता कहं ते दाहिणाअद्धमंडलसंठिई आहितेति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबूदीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं जाव परिक्खेवेणं०, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भिंतराणंतरं उत्तरद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ, जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते(हिं) दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई० दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भिंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ । ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओऽणंतरंसि तंसि २ देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे २ दाहिणाए २ अंतराए भागाए तस्साइपएसाए सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्व-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमछम्मासस्स पज्जवसाणे, से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतरभागाए तस्साइपएसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणअद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए बाहिरंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया सूरिए बाहिरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं०तंसि २ देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे २ उत्तराए अंतराभागाए तस्साइपएसाए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चसंवच्छरस्स पज्जवसाणे ॥ १० ॥ ता कहं ते उत्तरा अद्धमंडलसंठिइं आहितेति वएज्जा ? ता अयं णं जंबूदीवे दीवे सव्वदीव जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, जहा दाहिणा तहा चेव णवरं उत्तरट्ठिओ अभिंतराणंतरं दाहिणं उवसंकमइ, दाहिणाओ अभिंतरं तच्चं उत्तरं उवसंकमइ, एवं खलु एएणं उवाएणं जाव सव्वबाहिरं दाहिणं उवसंकमइ सव्वबाहिरं दाहिणं उवसंकमित्ता दाहिणाओ बाहिराणंतरं उत्तरं उवसंकमइ, उत्तराओ बाहिरं तच्चं दाहिणं तच्चाओ दाहिणाओ संकममाणे २ जाव सव्वब्भंतरं उवसंकमइ, तहेव। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे, गाहाओ ॥११॥ **पढमस्स पाहुडस्स बीयं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १-२ ॥**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ता के ते चिण्णं पडिचरइ आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पण्णत्ता, तंजहा–भारहे चेव सूरिए एरवए चेव सूरिए, ता एए णं दुवे सूरिया पत्तेयं २ तीसाए २ मुहुत्तेहिं एगमेगं अद्धमंडलं चरंति, सट्ठीए २ मुहुत्तेहिं एगमेगं मंडलं संघायंति, ता णिक्खममाणा खलु एए दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, पविसमाणा खलु एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, तं सयमेगं चोयालं, तत्थ के हेऊ०ति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबूदीवे २ जाव परिक्खेवेणं०, तत्थ णं अयं भारहए चेव सूरिए जंबूदीवस्स २ पाईणपडीणाययउदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउइं सूरियमयाइं जाइं अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ, उत्तरपच्चत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काणउइं सूरियमयाइं जाइं सूरिए अप्पणो चेव चिण्णं पडिचरइ, तत्थ णं अयं भारहे सूरिए एरवयस्स सूरियस्स जंबूदीवस्स २ पाईणपडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि बाणउइं सूरियमयाइं जाइं सूरिए परस्स चिण्णं पडिचरइ, दाहिणपच्चत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एगूणणउइं सूरियमयाइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णं पडिचरइ, तत्थ णं अयं एरवए सूरिए जंबूदीवस्स २ पाईणपडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि बाणउइं सूरियमयाइं जाव सूरिए अप्पणो चेव चिण्णं पडिचरइ, दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काणउइं सूरियमयाइं जाइं सूरिए अप्पणो चेव चिण्णं पडिचरइ, तत्थ णं अयं एरवइए सूरिए भारहस्स सूरियस्स जंबूदीवस्स २ पाईणपडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडल चउवीसएणं सएणं छेत्ता दाहिणपच्चत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउइं सूरियमयाइं सूरिए परस्स चिण्णं पडिचरइ, उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काणउइं सूरियमयाइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णं पडिचरइ, ता णिक्खममाणा खलु एए दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, पविसमाणा खलु एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, सयमेगं चोयालं। गाहाओ ॥ १२ ॥

पढमस्स पाहुडस्स तइयं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १-३ ॥

ता केवइयं एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ छ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–तत्थ एगे एवमाहंसु–ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति वएज्जा एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता एगं जोयणसहस्सं एगं च चउर्तासं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति वएज्जा एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु–ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणर्तासं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति वएज्जा एगे एवमाहंसु ३, एवं एगं दीवं एगं समुद्दं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु ४, एगे···दो दीवे दो समुद्दे अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति वएज्जा एगे एवमाहंसु ५, एगे···तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति वएज्जा एगे एवमाहंसु ६, वयं पुण एवं वयामो–ता पंच पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा वा णिवड्ढेमाणा वा सूरिया चारं चरंति० । तत्थ णं को हेऊ आहिएति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबूदीवे २ जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते, ता जया णं एए दुवे सूरिया सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं णवणउइजोयणसहस्साइं छच्चचत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वएज्जा, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, ते णिक्खममाणा सूरिया णवं संवच्छरं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एए दुवे सूरिया अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं णवणवइं जोयणसहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसए पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वएज्जा, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, ते णिक्खममाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एए दुवे सूरिया अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं णवणवइं जोयणसहस्साइं छच्चइक्कावण्णे जोयणसए णव य एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वएज्जा, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खलु एएणु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वाएणं णिक्खममाणा एए दुवे सूरिया तओऽणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणा २ पंच २ जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा २ सव्ववाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एए दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च सट्ठे जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, ते पविसमाणा सूरिया दोच्चं छम्मासं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एए दुवे सूरिया बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छत्तीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहितात्ति वएज्जा, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, ते पविसमाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एए दुवे सूरिया बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावण्णं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। एवं खलु एएणुवाएणं पविसमाणा एए दुवे सूरिया तओऽणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणा २ पंच २ जोयणाइं पणतीसे एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्संतरं णिवुड्ढेमाणा २ सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एए दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं णवणउइजोयणसहस्साइं छच्च चत्तालं जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चसंवच्छरस्स पज्जवसाणे ॥१३॥

पढमस्स पाहुडस्स चउत्थं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०४॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ता केवइयं ते दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ आहितात्ति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०—तत्थ एगे एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ···१, एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च चउत्तीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ०एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ०एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता अवड्ढं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ० एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता णो किंचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ···५, तत्थ जे ते एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, ते एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं जंबूदीवं २ एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं लवणसमुद्दं एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एवं चोत्तीसं जोयणसयं। एवं पणतीसं जोयणसयं। तत्थ जे ते एवमाहंसु—ता अवड्ढं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, ते एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अवड्ढं जंबूदीवं २ ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एवं सव्वबाहिरएवि, णवरं अवड्ढं लवणसमुद्दं, तया णं राइंदियं तहेव, तत्थ जे ते एवमाहंसु—ता णो किंचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, ते एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं णो किंचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तहेव एवं सव्वबाहिरए मंडले णवरं णो किंचि लवणसमुद्दं ओगाहित्ता चारं चरइ, राइंदियं तहेव, एगे एवमाहंसु ५॥ १४॥ वयं पुण एवं वयामो—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमिता चारं चरइ तया णं जंबूदीवं २ असीयं जोयण-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सयं ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एवं सव्वबाहिरेवि, णवरं लवणसमुद्दं तिण्णि तीसे जोयणसए ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, गाहाओ भाणियव्वाओ ॥१५॥ **पढमस्स पाहुडस्स पंचमं पाहुडपाहुडं समत्तं। १-५।**

ता केवइयं(ते)एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ सत्त पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु—ता दो जोयणाइं अद्धदुचत्तालीसं तेसीयसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ०एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता अड्ढाइज्जाइं जोयणाइं एगमेगेणं राईदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ०एगे एवमाहंसु २,एगे पुण एवमाहंसु—ता तिभागूणाइं तिण्णि जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ० एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—ता तिण्णि जोयणाइं अद्धसीयालीसं च तेसीइसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ० एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता अद्धुट्ठाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ० एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता चउभागूणाइं चत्तारि जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ०एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु—ता चत्तारि जोयणाइं अद्धबावण्णं च तेसीइसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ० एगे एवमाहंसु ७। वयं पुण एवं वयामो—ता दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ०, तत्थ णं को हेऊ०ति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबूदीवे २ जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए आब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता २ चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभाग-मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकम-माणे २ दो २ जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं पंचदसुत्तर-जोयणसए विकंपइत्ता२ चारं चरइ,तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एस णं पढमछम्मासे, एस णं पढमछम्मासस्स पज्जवसाणे,से य पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दो दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्सं एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरतच्चंसि मंडलंसि उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता २ चारं चरइ, राइंदिए तहेव, एवं खलु एएणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तओऽणंतराओ तयाणंतरं च णं मंडलं संकममाणे २ दो २ जोयणाइं अडयालीसं ज एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंप-माणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहि-राओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं पंचदसुत्तरे जोयणसए विकंपइत्ता २ चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

साणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पजवसाणे ॥१६॥

पढमस्स पाहुडस्स छट्ठं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१-६॥

ता कहं ते मंडलसंठिई आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०–तत्थेगे एवमाहंसु–ता सव्वावि णं मंडलवया समचउरंससंठाणसंठिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता सव्वावि णं मंडलवया विसमचउरंससठाणसंठिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु–ता सव्वावि णं मंडलवया समचउक्कोणसंठिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु–ता सव्वावि णं मंडलवया विसमचउक्कोणसंठिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु–ता सव्वावि णं मंडलवया समचक्कवालसंठिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु–ता सव्वावि णं मंडलवया विसमचक्कवालसंठिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु–ता सव्वावि णं मंडलवया चक्कद्धचक्कवालसंठिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु–ता सव्वावि णं मंडलवया छत्तागारसंठिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ८, तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता सव्वावि णं मंडलवया छत्तागारसंठिया पण्णत्ता एएणं णएणं णायव्वं, णो चेव णं इयरेहिं, पाहुडगाहाओ भाणियव्वाओ ॥१७॥ **पढमस्स पाहुडस्स सत्तमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १–७ ॥**

ता सव्वावि णं मंडलवया केवइयं बाहल्लेणं केवइयं आयामविक्खम्भेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा–तत्थेगे एवमाहंसु–ता सव्वावि णं मंडलवया जोयणं बाहल्लेणं एगे जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं आयामविक्खम्भेणं तिण्णि जोयणसहस्साइं तिण्णि य णवणउए जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता सव्वावि णं मंडलवया जोयणं बाहल्लेणं एगं जोयणसहस्सं एगं च चउतीसं जोयणसयं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसहस्साइं चत्तारि बिउत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु–ता० जोयणं बाहल्लेणं एगं जोयणसहस्सं एमं च पणतीसं जोयणसयं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसहस्साइं चत्तारि य पंचुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ३, वयं पुण एवं वयामो–ता सव्वावि णं मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बाहल्लेणं अणियया आयामविक्खंभेणं परिक्खेवेणं आहितात्ति वएज्जा, तत्थ णं को हेऊ० त्ति वएज्जा ! ता अयण्णं जम्बूदीवे २ जाव परिक्खेवेणं०, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च चत्तालेजोयणसए आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरसजोयणसहस्साइं एगूणणउइं जोयणाइं किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं०, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं णवणउइजोयणसहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसए पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य सहस्साइं एगं चउत्तरं जोयणसयं किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं०, तया णं दिवसराइप्पमाणं तहेव। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंपि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं णवणउइजोयणसहस्साइं छच्च एक्कावण्णे जोयणसए णव य एगट्ठिभागा जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य सहस्साइं एगं च पणवीसं जोयणसयं परिक्खेवेणं पण्णत्ता, तया णं दिवसराई तहेव, एवं खलु एएणं णएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं उवसंकममाणे २ पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे २ अट्ठारस २ जोयणाइं परिरयवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागा जोयणस्स बाहल्लेणं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च सट्ठे जोयणसए आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं तिण्णि य पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं०, तया णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छव्वीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारससहस्साइं दोण्णि य सत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता, तया णं राइंदियं तहेव, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावण्णं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारससहस्साइं दोण्णि य अउणासीए जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता, दिवसराई तहेव, एवं खलु एएणुवाएणं से पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ पंच २ जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढिं णिवुड्ढेमाणे २ अट्ठारस जोयणाइं परिरयवुड्ढिं णिवुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च चत्तालं जोयणसए आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य सहस्साइं अउणाउइं च जोयणाइं किंचिविसेसाहियाइं परिक्खेवेणं पण्णत्ता,तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे, ता सव्वावि णं मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, सव्वावि णं मंडलंतरिया दो जोयणाइं विक्खंभेणं, एस णं अद्धा तेसीयसयपडुप्पण्णो पंचदसुत्तरे जोयणसए आहितात्ति वएज्जा, ता अब्भिंतराओ मंडलवयाओ बाहिरं मंडलवयं बाहिराओ वा० आब्भिंतरं मंडलवयं एस णं अद्धा केवइयं आहितात्ति वएज्जा ? ता पंचदसुत्तरजोयणसए आहितात्ति वएज्जा, ता अब्भिंतराए मंडलवयाए बाहिरा मंडलवया बाहिराओ मंडलवयाओ आब्भिंतरा मंडलवया एस णं अद्धा केवइयं आहितात्ति वएज्जा ? ता पंचदसुत्तरे जोयणसए अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितात्ति वएज्जा, ता अब्भिंतराओ मंडलवयाओ बाहिरमंडलवया बाहिराओ० अब्भंतरमंडलवया एस णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अद्धा केवइयं आहितात्ति वएज्जा ? ता पंचणवुत्तरे जोयणसए तेरस य एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितात्ति वएज्जा, ता अब्भितराए मंडलव्वयाए बाहिरा मंडलव्वया बाहिराए मंडलव्वयाए अब्भितरमंडलव्वया एस णं अद्धा केवइयं आहितात्ति वएज्जा ? ता पंचदसुत्तरे जोयणसए आहितात्ति वएज्जा ॥१८॥ **पढमस्स पाहुडस्स अट्ठमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०८॥ पढमं पाहुडं समत्तं ॥१॥**

बिइयं पाहुडं

ता कहं ते तेरिच्छगई आहितात्ति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ मरीई आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ तिरियं करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायंमि रायं आगासंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सूरिए आगासंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंसि सायं सूरिए आगासं अणुपविसइ २ त्ता अहे पडियागच्छइ अहे पडियागच्छेत्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोगंताओ पाओ सूरिए पुढविकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ करेत्ता पच्चत्थिमिल्लंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढविकायंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढविकायंसि अणुपविसइ अणुपविसित्ता अहे पडियागच्छइ २ त्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविकायंसि उत्तिट्ठइ एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमिल्लाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि पाओ सूरिए आउकायंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोगंताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ करित्ता पच्चत्थिमं लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायंसि अणुपविसइ २ त्ता अहे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पडियागच्छइ २ त्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउ-कायंसि उत्तिट्ठइ एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु–ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थ णं पाओ सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं दाहिणड्ढं लोयं तिरियं करेइ करेत्ता उत्तरड्ढलोयं तमेव राओ, से णं इमं उत्तरड्ढलोयं तिरियं करेइ २ त्ता दाहिणड्ढलोयं तमेव राओ, से णं इमाइं दाहिणुत्तरड्ढलोयाइं तिरियं करेइ करेत्ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं उड्ढं दूरं उप्प-इत्ता एत्थ णं पाओ सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ एगे एवमाहंसु ८। वयं पुण एवं वयामो–ता जम्बूदीवस्स २ पाईणपडीणाययउदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउ-व्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमंसि उत्तरपच्चत्थिमंसि य चउब्भागमंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता एत्थ णं पाओ दुवे सूरिया० उत्तिट्ठंति, ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं जम्बू-दीवभागाइं तिरियं करेंति २ त्ता पुरत्थिमपच्चत्थिमाइं जम्बूदीवभागाइं तमेव राओ, ते णं इमाइं पुरत्थिमपच्चत्थिमाइं जम्बूदीवभागाइं तिरियं करेंति २ त्ता दाहिणुत्तराइं जम्बूदीवभागाइं तमेव राओ, ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं पुरत्थिमपच्चत्थिमाइं च जम्बूदीवभागाइं तिरियं करेंति २ त्ता जम्बूदीवस्स २ पाईणपडीणाययउदीणदाहि-णाययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि उत्तरपच्च-त्थिमिल्लंसि य चउभागमंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता एत्थ णं पाओ दुवे सूरिया आगा-संसि उत्तिट्ठंति।१९। **बिइयस्स पाहुडस्स पढमं पाहुडपाहुडं समत्तं।**

ता कहं ते मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०–तत्थेगे एवमाहंसु–ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए भेयघाएणं संकमइ० एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमा-हंसु–ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए कण्णकलं णिव्वेढेइ···२, तत्थ (णं) जे ते एवमाहंसु–ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए भेयघाएणं संकमइ, तेसि णं अयं दोसे, ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए भेयघाएणं संकमइ एवइयं च णं अद्धं पुरओ ण गच्छइ, पुरओ अगच्छमाणे मंडलकालं परिहवेइ, तेसि णं अयं दोसे, तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए कण्णकलं णिव्वेढेइ, तेसि णं अयं विसेसे, ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूरिए कण्णकलं णिव्वेढेइ एवइयं च णं अद्धं पुरओ गच्छइ, पुरओ गच्छमाणे मंडलकालं ण परिहवेइ, तेसि णं अयं विसेसे, तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए कण्णकलं णिव्वेढेइ, एएणं णएणं णेयव्वं, णो चेव णं इयरेणं ॥ २० ॥ **बिइयस्स पाहुडस्स बिइयं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ २·२ ॥**

ता केवइयं ते खेत्तं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ चत्तारि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०–तत्थ एगे एवमाहंसु–ता छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ० एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु–ता पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ० एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु–ता चत्तारि २ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ० एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु–ता छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ० एगे एवमाहंसु ४, तत्थ खलु जे ते एवमाहंसु–ता छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु–ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, तंसि च णं दिवसंसि एगं जोयणसयसहस्सं अट्ठ य जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु–ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तहेव दिवसराइप्पमाणं, तंसि च णं दिवसंसि तावक्खेत्तं णउइजोयणसहस्साइं, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं तं चेव राइंदियप्पमाणं, तंसि च णं दिवसंसि सट्ठिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता चत्तारि २ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु–ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दिवसराई तहेव, तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंक-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मित्ता चारं चरइ तया णं राइंदियं तहेव, तंसि च णं दिवसंसि अडयालीसं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं चत्तारि २ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु–ता सूरिए णं उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य सिग्घगई भवइ, तया णं छ छ जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, मज्झिमतावक्खेत्तं समासाएमाणे २ सूरिए मज्झिमगई भवइ, तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, मज्झिम २ तावक्खेत्तं संपत्ते सूरिए मंदगई भवइ, तया णं चत्तारि जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तत्थ को हेऊ०ति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं०, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दिवसराई तहेव, तंसि च णं दिवसंसि एक्काणउइं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं राइंदियं तहेव, तस्सिं च णं दिवसंसि एगट्ठिजोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ एगे एवमाहंसु । वयं पुण एवं वयामो–ता साइरेगाइं पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ०, तत्थ को हेऊ०ति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे २···परिक्खेवेणं०, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तयां णं पंच २ जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए एगूणतीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तया णं इहगयस्स मणुस्सस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, तया णं दिवसे राई तहेव, से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए सीयालीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं अउणासीए य जोयणसए सत्तावण्णाए सट्ठिभागेहिं जोयणस्सं सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता अउणावीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, तया णं दिवसराई तहेव, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच २ जोयणसहस्साइं दोण्णि य बावण्णे जोयणसए पंच य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउईए य जोयणेहिं तेत्तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता दोहिं चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, तया णं दिवसराई तहेव, एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ अट्ठारस २ सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं अभिवुड्ढेमाणे २ चुलसीइं साइरेगाइं जोयणाइं पुरिसच्छायं णिवुड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच २ जोयणसहस्साइं तिण्णि य पंचुत्तरे जोयणसए पण्णरस य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तया णं इहगयस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहिं एक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच २ जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउरुत्तरे जोयणसए सत्तावण्णं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तया णं इहगयस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं णवहि य सोलेहिं जोयणसएहिं एगूणयालीसाए सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता सट्ठिए चुण्णियाभागे सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, तया णं राइंदियं तहेव, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउत्तरे जोयणसए ऊयालीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तया णं इहगयस्स मणूसस्स एगाहिगेहिं बत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं एक्कावण्णाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता तेवीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, राइंदियं तहेव, एवं खलु एएणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठारस २ सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं णिवुड्ढेमाणे २ साइरेगाइं पंचासीइं २ जोयणाइं पुरिसच्छायं अभिवुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच २ जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए अट्ठतीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य दोवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ॥२१॥ **बिइयस्स पाहुडस्स तइयं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ २-३॥**

बिइयं पाहुडं समत्तं ॥ २ ॥

तइयं पाहुडं

ता केवइयं खेत्तं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासंति आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ बारस पडिवत्तीओ पण्णताओ, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु-ता एगं दीवं एगं समुद्दं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति''' १, एगे पुण एवमाहंसु—ता तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति'''एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता अद्धचउत्थे दीवसमुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति''' एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता सत्त दीवे सत्त समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति'''एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता दस दीवे दस समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति'''एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता बारस दीवे बारस समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति'''६ एगे पुण एवमाहंसु—ता बायालीसं दीवे बायालीसं समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति'''एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु—ता बावत्तरिं दीवे बावत्तरिं समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति'''एगे एवमाहंसु ८, एगे पुण एवमाहंसु—ता बायालीसं दीवसयं बायालीसं समुद्दसयं चंदिमसूरिया ओभासंति '''एगे एवमाहंसु ९, एगे पुण एवमाहंसु—ता बावत्तरिं दीवसयं बावत्तरिं समुद्दसयं चंदिमसूरिया ओभासंति'''एगे एवमाहंसु १०, एगे पुण एवमाहंसु—ता बायालीसं दीवसहस्सं बायालं समुद्दसहस्सं चंदिमसूरिया ओभासंति'''एगे एवमाहंसु ११, एगे पुण एवमाहंसु—ता बावत्तरिं दीवसहस्सं बावत्तरिं समुद्दसहस्सं चंदिमसूरिया ओभा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संति···एगे एवमाहंसु १२,वयं पुण एवं वयामो–ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ सव्वदीव-समुद्दाणं जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते, से णं एगाए जगईए सव्वओ समंता संपरि-क्खित्ते, सा णं जगई तहेव जहा **जंबूदीवपण्णत्तीए** जाव एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे २ चोद्दससलिलासयसहस्सा छप्पण्णं च सलिलासहस्सा भवंतीति मक्खाया जंबुद्दीवे णं दीवे पंचचक्कभागसंठिए आहिएति वएज्जा, ता कहं जंबुद्दीवे २ पंचचक्क-भागसंठिए आहिएति वएज्जा ? ता जया णं एए दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स २ तिण्णि पंचचक्कभागे ओभासंति... तंजहा–एगेवि एगं दिवड्ढं पंचचक्कभागं ओभासइ···, एगेवि एगं दिवड्ढं पंचचक्कभागं ओभासेइ···, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, ता जया णं एए दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंक-मित्ता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स २ दोण्णि चक्कभागे ओभासंति···ता एगेवि सूरिए एगं पंचचक्कवालभागं ओभासइ उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ, एगेवि एगं पंचचक्क-वालभागं ओभासइ···, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ २२ ॥ **तइयं पाहुडं समत्तं ॥३॥**

चउत्थं पाहुडं

ता कहं ते सेयाए संठिई आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमा दुविहा संठिई पण्णत्ता, तंजहा–चंदिमसूरियसंठिई य तावक्खेत्तसंठिई य,ता कहं ते चंदिमसूरिय-संठिई आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०–तत्थेगे एवमाहंसु–ता समचउरंससंठिया णं चंदिमसूरियसंठिई०एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता विसमचउरंससंठिया णं चंदिमसूरियसंठिई पण्णत्ता० २, एवं एएणं अभिलावेणं समचउक्कोणसंठिया ३,विसमचउक्कोणसंठिया ४,समचक्क-वालसंठिया ५, विसमचक्कवालसंठिया ६, ···ता चक्कद्धचक्कवालसंठिया···पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु–ता छत्तागारसंठिया णं चंदिमसूरियसंठिई पण्णत्ता० ८, एवं गेहसंठिया ९, गेहावणसंठिया १०, पासायसंठिया ११, गोपुर-संठिया १२, पेच्छाघरसंठिया १३, वलभीसंठिया १४, हम्मियतलसंठिया १५, एगे पुण एवमाहंसु–ता वालग्गपोइयासंठिया णं चंदिमसूरियसंठिई पण्णत्ता० १६, तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता समचउरंससंठिया णं चंदिमसूरियसंठिई पण्णत्ता०, एवं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एएणं णएणं णेयव्वं णो चेव णं इयरेहिं। ता कहं ते तावक्खेत्तसंठिई आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ,तं०—तत्थ णं एगे एवमाहंसु—ता गेहसंठिया णं तावक्खेत्तसंठिई पण्णत्ता एवं जाव वालग्गपोइयासंठिया णं तावक्खेत्तसंठिई०,एगे पुण एवमाहंसु—ता जस्संठिए णं जंबुद्दीवे २तस्संठिया णं तावक्खेत्तसंठिई पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ९,एगे पुण एवमाहंसु—ता जस्संठिए णं भारहे वासे तस्संठिया० पण्णत्ता० १०, एवं उज्जाणसंठिया णिज्जाणसंठिया एगओ णिसहसंठिया दुहओ णिसहसंठिया सेयणगसंठिया० एगे एवमाहंसु १५, एगे पुण एवमाहंसु—ता सेणगपट्टसंठिया णं तावक्खेत्तसंठिई पण्णत्ता एगे एवमाहंसु १६, वयं पुण एवं वयामो—ता उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठिया णं तावक्खेत्तसंठिई पण्णत्ता, अंतो संकुडा बाहिं वित्थडा अंतो वट्टा बाहिं पिहुला अंतो अंकमुहसंठिया बाहिं सत्थिमुहसंठिया, उभओ पासेणं तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ भवंति पणयालीसं २ जोयणसहस्साइं आयामेणं, तीसे दुवे बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तंजहा—सव्वब्भंतरिया चेव बाहा सव्वबाहिरिया चेव बाहा, तत्थ को हेऊ०ति वएज्जा ? ता अयण्णं जम्बुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं०, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठिया णं तावक्खेत्तसंठिई आहितेति वएज्जा, अंतो संकुडा बाहिं वित्थडा अंतो वट्टा बाहिं पिहुला अंतो अंकमुहसंठिया बाहिं सत्थिमुहसंठिया, दुहओ पासेणं तीसे तहेव जाव सव्वबाहिरिया चेव बाहा, तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं णव जोयणसहस्साइं चत्तारि य छलसीए जोयणसए णव य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहितेति वएज्जा, तासे णं परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ? ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं तिहिं गुणित्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्जा, तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्देणं चउणउइं जोयणसहस्साइं अट्ठ य अट्ठसट्ठे जोयणसए चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहितेति वएज्जा, तासे णं परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ? ता जे णं जम्बुद्दीवस्स २ परिक्खेवे··· तिहिं गुणित्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्जा, तीसे णं तावक्खेत्ते केवइयं आयामेणं आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठत्तरिं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागे यं आयामेणं आहिएति वएज्जा, तया णं किंसंठिया अंधयारसंठिई आहितेति वएज्जा ? ता उड्ढीमुहकलंबुया-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुप्फसंठिया तहेव जाव बाहिरिया चेव बाहा, तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदर-पव्वयंतेणं छज्जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउव्वीसे जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहितात्ति वएज्जा, तीसे णं परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ? ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे तं परिक्खेव दोहिं गुणेत्ता सेसं तहेव, तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्देतेणं तेवट्ठिजोयणसहस्साइं दोण्णि य पणयाले जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहितात्ति वएज्जा, तासे णं परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ? ता जे णं जम्बुद्दीवस्स २ परिक्खेवे तं परिक्खेवं दोहिं गुणित्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्जा, ता से णं अंधयारे केवइयं आयामेणं आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठत्तारिं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागं च आयामेणं आहिएति वएज्जा, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं किंसंठिया तावक्खेत्तसंठिई आहितात्ति वएज्जा ? ता उद्धीमुहकलंबुया-पुप्फसंठिया तावक्खेत्तसंठिई आहितात्ति वएज्जा, एवं जं अब्भिंतरमंडले अंधयार-संठिईए पमाणं तं बाहिरमंडले तावक्खेत्तसंठिईए जं तहिं तावक्खेत्तसंठिईए तं बाहिरमंडले अंधयारसंठिईए भाणियव्वं जाव तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, ता जंबुद्दीवे २ सूरिया केवइयं खेत्तं उड्ढं तवंति केवइयं खेत्तं अहे तवंति केवइयं खेत्तं तिरियं तवंति ? ता जम्बुद्दीवे णं दीवे सूरिया एगं जोयणसयं उड्ढं तवंति अट्ठारस जोयणसयाइं अहे तवंति सीयालीसं जोयणसहस्साइं दुण्णि य तेवट्ठे जोयणसए एगवीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स तिरियं तवंति ॥२३॥ **चउत्थं पाहुडं समत्तं ॥४॥**

पंचमं पाहुडं

ता कम्मि णं सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहितात्ति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु—ता मंदरंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहितात्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता मेरुंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहितात्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु २, एवं एएणं अभिलावेणं भाणियव्वं—ता मणोरमंसि णं पव्वयंसि, ता सुदंसणंसि णं पव्वयंसि, ता सयंपभंसि णं पव्वयंसि, ता गिरिरायंसि णं पव्वयंसि, ता रयणुच्चयंसि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णं पव्वयंसि, ता सिलुच्चयंसि णं पव्वयंसि, ता लोयमज्झंसि णं पव्वयंसि, ता लोयणाभिंसि णं पव्वयंसि, ता अच्छंसि णं पव्वयंसि, ता सूरियावत्तंसि णं पव्वयंसि, ता सूरियावरणंसि णं पव्वयंसि, ता उत्तमंसि णं पव्वयंसि, ता दिसाइंसि णं पव्वयंसि, ता अवयंसंसि णं पव्वयंसि, ता धरणिखीलंसि णं पव्वयंसि, ता धरणिसिंगंसि णं पव्वयंसि, ता पव्वइंदंसि णं पव्वयंसि, ता पव्वयरायंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिताति वएज्जा, एगे एवमाहंसु २० । वयं पुण एवं वयामो–ता मंदरेवि पवुच्चइ जाव पव्वयराया० पवुच्चइ, ता जे णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं पुसंति ते णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति, अदिट्ठावि णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति, चरिमलेस्संतरगयावि णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति० ॥२४॥

पंचमं पाहुडं समत्तं ॥५॥

छट्ठं पाहुडं

ता कहं ते ओयसंठिई आहिताति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०–तत्थेगे एवमाहंसु–ता अणुसमयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता अणुमुहुत्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ० २, एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वा–ता अणुराइंदियमेव, ता अणुपक्खमेव, ता अणुमासमेव, ता अणुउडुमेव, ता अणुअयणमेव, ता अणुसंवच्छरमेव, ता अणुजुगमेव, ता अणुवाससयमेव, ता अणुवाससहस्समेव, ता अणुवाससयसहस्समेव, ता अणुपुव्वमेव, ता अणुपुव्वसयमेव, ता अणुपुव्वसहस्समेव, ता अणुपुव्वसयसहस्समेव, ता अणुपलिओवममेव, ता अणुपलिओवमसयमेव, ता अणुपलिओवमसहस्समेव, ता अणुपलिओवमसयसहस्समेव, ता अणुसागरोवममेव, ता अणुसागरोवमसयमेव, ता अणुसागरोवमसहस्समेव, ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव, एगे पुण एवमाहंसु–ता अणुउस्सप्पिणिओसप्पिणिमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु २५ । वयं पुण एवं वयामो–ता तीसं २ मुहुत्ते सूरियस्स ओया अवट्ठिया भवइ, तेण परं सूरियस्स ओया अणवट्ठिया भवइ, छम्मासे सूरिए ओयं णिवुड्ढेइ छम्मासे सूरिए ओयं अभिवड्ढेइ, णिक्खममाणे सूरिए देसं णिवुड्ढेइ पविसमाणे सूरिए देसं अभिवुड्ढेइ, तत्थ को हेऊ० ति वएज्जा ? ता अयण्णं जम्बुद्दीवे २ सव्वदीवसमु० जाव परिक्खेवेणं०, ता जया णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढित्ता रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरइ मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दोहिं राइंदिएहिं दो भागे ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढित्ता रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरइ मंडलं अट्ठारसतीसेहिं सएहिं छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खलु एएणुवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ एगमेगे मंडले एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं भागं ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे २ रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं एगं तेसीयं भागसयं ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं० छेत्ता, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एस णं पढमछम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए रयणिखेत्तस्स णिवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं० छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरतच्चं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दोहिं राइंदिएहिं दो भाए ओयाए रयणिखेत्तस्स णिवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं० छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, एवं खलु एएणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं भागं ओयाए रयणिखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं एगं तेसीयं भागसयं ओयाए रयणिखेत्तस्स णिवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ मंडलं अट्ठारसतीसेहिं सएहिं छेत्ता, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे।२५।

छट्ठं पाहुडं समत्तं ॥६॥

सत्तमं पाहुडं

ता किं ते सूरियं वरंति आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु—ता मंदरे णं पव्वए सूरियं वरयइ आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता मेरू णं पव्वए सूरियं वरइ आहितेति वएज्जा० २, एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं जाव पव्वयराए णं पव्वए सूरियं वरयइ आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु २०, वयं पुण एवं वयामो—ता मंदरेवि पवुच्चइ तहेव जाव पव्वयराएवि पवुच्चइ, ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला सूरियं वरयंति, अदिट्ठावि णं पोग्गला सूरियं वरयंति, चरमलेस्संतरगयावि णं पोग्गला सूरियं वरयंति० ॥२६॥ **सत्तमं पाहुडं समत्तं ॥ ७ ॥**

अट्ठमं पाहुडं

ता कहं ते उदयसंठिई आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु—ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एवं (एएणं अभिलावेणं)परिहावेयव्वं, सोलसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे चउद्दसमुहुत्ते दिवसे तेरसमुहुत्ते दिवसे जाव जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे० तया णं उत्तरड्ढेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं सया पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सया पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, अवट्ठिया णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता समणाउसो ! एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्तानंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्तानंतरे दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्तानंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्तानंतरे दिवसे भवइ, एवं परिहावेयव्वं, सत्तरसमुहुत्तानंतरे दिवसे भवइ सोलसमुहुत्तानंतरे०, पण्णरसमुहुत्तानंतरे दिवसे भवइ चोद्दसमुहुत्तानंतरे०, तेरसमुहुत्तानंतरे०, ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे बारसमुहुत्तानंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि बारसमुहुत्तानंतरे दिवसे०, जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्तानंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि बारसमुहुत्तानंतरे दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं णो सया पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णो सया पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, अणवट्ठिया णं तत्थ राइंदिया प० समणाउसो ! एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ, जया णं दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्तानंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ, जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्तानंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ, एवं णेयव्वं सगलेहिं य अणंतरेहिं य एक्केक्के दो दो आलावगा सव्वेहिं दुवालसमुहुत्ता राई भवइ जाव ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे बारसमुहुत्तानंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, जया णं उत्तरड्ढे दुवालस-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, वोच्छिण्णा णं तत्थ राइंदिया प० समणाउसो ! एगे एवमाहंसु ३ । वयं पुण एवं वयामो—ता जंबुद्दीवे २ सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छंति पाईणदाहिणमागच्छंति पाईणदाहिणमुग्गच्छंति दाहिणपडीणमागच्छंति दाहिणपडीणमुग्गच्छंति पडीणउदीणमागच्छंति पडीणउदीणमुग्गच्छंति उदीणपाईणमागच्छंति, ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे० दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे० तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं राई भवइ, ता जया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं दिवसे भवइ तया णं पच्चत्थिमेणवि दिवसे भवइ, जया णं पच्चत्थिमेणं दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं राई भवइ, ता जया णं० दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ,जया णं उत्तरड्ढे० तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, ता जया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं पच्चत्थिमेणवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं पच्चत्थिमेणं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एवं एएणं गमेणं णेयव्वं, अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगदुवालसमुहुत्ता राई भवइ, सत्तरसमुहुत्ते दिवसे तेरसमुहुत्ता राई, सत्तरसमुहुत्तांणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगतेरसमुहुत्ता राई भवइ, सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चोद्दसमुहुत्ता राई भवइ, सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगचोद्दसमुहुत्ता राई भवइ, पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई, पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे० साइरेगपण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, चउद्दसमुहुत्ते दिवसे सोलसमुहुत्ता राई, चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगसोलसमुहुत्ता राई, तेरसमुहुत्ते दिवसे सत्तरसमुहुत्ता राई, तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगसत्तरसमुहुत्ता राई, ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे जहण्णए दुवालसमुहुत्तए दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे० जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, ता जया णं जम्बुद्दीवे २

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं पच्चत्थिमेणवि जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं पच्चत्थिमेणं जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स० उत्तरदाहिणेणं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं उत्तरड्ढेवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, जया णं उत्तरड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं जम्बुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं अणंतरपुरक्खडकालसमयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, ता जया णं जम्बुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं पच्चत्थिमेणवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, जया णं पच्चत्थिमेणं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं जम्बुद्दीवे २ मंदरउत्तरदाहिणेणं अणंतरपच्छाकडकालसयं सि वासाणं पढमे समए पडिवण्णे भवइ, जहा समओ एवं आवलिया आणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते पक्खे मासे ऊऊ, एवं दस आलावगा जहा वासाणं एवं हेमंताणं गिम्हाणं च भाणियव्वा, ता जया णं जम्बुद्दीवे २ दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ तया णं उत्तरड्ढेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जया णं उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ तया णं दाहिणड्ढेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जया णं उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ तया णं जम्बुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं अणंतरपुरक्खडकालसमयंसि पढमे अयणे पडिवज्जइ, ता जया णं जम्बुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं पच्चत्थिमेणवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जया णं पच्चत्थिमेणं पढमे अयणे पडिवज्जइ तया णं जम्बुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं अणंतरपच्छाकडकालसमयंसि पढमे अयणे पडिवण्णे भवइ, जहा अयणे तहा संवच्छरे जुगे वाससए, एवं वाससहस्से वाससयसहस्से पुव्वंगे पुव्वे एवं जाव सीसपहेलिया पलिओवमे सागरोवमे, ता जया णं जम्बुद्दीवे २ दाहिणड्ढे उस्सप्पिणी पडिवज्जइ तया णं उत्तरड्ढेवि उस्सप्पिणी पडिवज्जइ, जया णं उत्तरड्ढे उस्सप्पिणी पडिवज्जइ तया णं जम्बुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं णेवत्थि उस्सप्पिणी णेव अत्थि ओसप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !० एवं ओस्सप्पिणीवि। ता जया णं लवणे समुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तया णं लवणसमुद्दे उत्तरड्ढे० दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ तया णं लवणसमुद्दे पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं राई भवइ, जहा जम्बूद्दीवे २ तहेव जाव उस्सप्पिणी०, तहा धायइसंडे णं दीवे सूरिया उदीण० तहेव, ता जया णं धायइसंडे दीवे दाहिणड्ढे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दिवसे भवइ तया णं उत्तरद्धेवि दिवसे भवइ, जया णं उत्तरद्धे दिवसे भवइ तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं राई भवइ, एवं जम्बुद्दीवे २ जहा तहेव जाव उस्सप्पिणी०, कालोए णं जहा लवणे समुद्दे तहेव, ता अब्भंतर-पुक्खरद्धे णं सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छ तहेव, ता जया णं अब्भंतरपुक्खरद्धे णं दाहिणद्धे दिवसे भवइ तया णं उत्तरद्धेवि दिवसे भवइ, जया णं उत्तरद्धे दिवसे भवइ तया णं अब्भिंतरपुक्खरद्धे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं राई भवइ, सेसं जहा जम्बुद्दीवे २ तहेव जाव उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ ॥२७॥ **अट्ठमं पाहुडं समत्तं ॥८॥**

णवमं पाहुडं

ता कइकट्ठं ते सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला संतप्पंति, ते णं पोग्गला संतप्पमाणा तयणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंतीति एस णं से समिए तावक्खेत्ते एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला णो संतप्पंति, ते णं पोग्गला असंतप्पमाणा तयणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं णो संतावेंतीति एस णं से समिए तावक्खेत्ते एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला अत्थेगइया संतप्पंति अत्थेगइया णो संतप्पंति, तत्थ अत्थेगइया संतप्पमाणा तयणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंति अत्थेगइया असंतप्पमाणा तयणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं णो संतावेंति, एस णं से समिए तावक्खेत्ते एगे एवमाहंसु ३। वयं पुण एवं वयामो—ता जाओ इमाओ चंदिमसूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेसाओ बहिया [उच्छूढा] अभिणिसट्ठाओ पतावेंति, एयासि णं लेसाणं अंतरेसु अण्णयरीओ छिण्णलेसाओ संमुच्छंति, तए णं ताओ छिण्णलेसाओ संमुच्छियाओ समाणीओ तयणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंति इइ एस णं से समिए तावक्खेत्ते ॥२८॥ ता कइकट्ठे ते सूरिए पोरिसि-च्छायं णिव्वत्तेइ आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पण्णवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु—ता अणुसमयमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुमुहुत्तमेव सूरिए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ आहितेति वएज्जा०, एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं, ता जाओ चेव ओयसंठिईए पणवीसं पडिवत्तीओ ताओ चेव णेयव्वाओ जाव अणुउस्सप्पिणी०मेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ आहिताति वएज्जा, एगे एवमाहंसु २५। वयं पुण एवं वयामो–ता सूरियस्स णं उच्चत्तं च लेसं च पडुच्च छाउद्देसे उच्चत्तं च छायं च पडुच्च लेसुद्देसे लेसं च छायं च पडुच्च उच्चत्तुद्देसे, तत्थ खलु इमाओ दु। पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ,तं०–तत्थेगे एवमाहंसु–ता अत्थि णं से दिवसे जंसि च णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ,अत्थि णं से दिवसे जंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ० एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता अत्थि णं से दिवसे जंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ, अत्थि णं से दिवसे जंसि० दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ०२, तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता अत्थि णं से दिवसे जंसि च णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, अत्थि णं से दिवसे जंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु–ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, तंसि च णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, तं०—उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य, लेसं अभिवड्ढेमाणे णो चेव णं णिवुड्ढेमाणे, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, तं०–उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य, लेसं अभिवुड्ढेमाणे णो चेव णं णिवुड्ढेमाणे० १, तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से दिवसे जंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, अत्थि णं से दिवसे जंसि च णं दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु–ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, तं०–उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य, लेसं अभिवड्ढेमाणे णो चेव णं णिवुड्ढेमाणे०,…ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तंसि च णं दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ, तं०—उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य, णो चेव णं लेसं अभिवुड्ढेमाणे वा णिवुड्ढेमाणे वा० २, ता कहकट्ठं ते सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ आहितात्ति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ छण्णउई पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि च णं देसंसि सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ० एगे एवमाहंसु, एगे पुण एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि च णं देसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ०, एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं जाव छण्णउइं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ, तत्थ जे ते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि च णं देसंसि सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु—ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमाओ सूरप्पडिहीओ बहिया अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइयं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवइयाए एगाए अद्धाए एगेणं छायाणुमाणप्पमाणेणं उमाए तत्थ से सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, तत्थ जे ते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि च णं देसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु—ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमाओ सूरियप्पडिहीओ बहिया अभिणिसट्ठियाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइयं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवइयाहिं दोहिं अद्धाहिं दोहिं छायाणुमाणप्पमाणेहिं उमाए एत्थ णं से सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, एवं णेयव्वं जाव तत्थ जे ते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि च णं देसंसि सूरिए छण्णउइं पोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु—ता सूरियस्स णं सव्वहिट्ठिमाओ सूरप्पडिहीओ बहिया अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइयं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवइयाहिं छण्णवईए छायाणुमाणप्पमाणाहिं उमाए एत्थ णं से सूरिए छण्णउइं पोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ एगे एवमाहंसु, वयं पुण एवं वयामो—ता साइरेगअउणट्ठिपोरिसीणं सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ०, ता अवड्ढपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता तिभागे गए वा सेसे वा, ता पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता चउब्भागे गए वा सेसे वा, ता दिवड्ढपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता पंचमभागे गए वा सेसे वा, एवं अद्धपोरिसिं छोढुं पुच्छा दिवसस्स भागं छोढुं वागरणं जाव ता अद्धअउणासट्ठिपोरिसीछाया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता एगूणवीससयभागे गए वा सेसे वा, ता अउणासट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता बावीससहस्सभागे गए वा सेसे वा, ता साइरेगअउणासट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता णत्थि किंचि गए वा सेसे वा, तत्थ खलु इमा पणवीसणिविट्ठा छाया प०, तं०—खंभच्छाया रज्जुच्छाया पागारच्छाया पासायच्छाया उवग्गच्छाया उच्चत्तच्छाया अणुलोमच्छाया आरुभिया समा पडिहया खीलच्छाया पक्खच्छाया पुरओउदया पुरिमकंठभाउवगया पच्छिमकंठभाउवगया छायाणुवाइणी किट्ठाणुवाइणीछाया छायच्छाया १७गोलछाया, तत्थ णं गोलच्छाया अट्ठविहा पण्णत्ता, तंजहा—गोलच्छाया अवट्ठगोलच्छाया गाढलग्गोलच्छाया अवट्ठगाढलग्गोलच्छाया गोलावलिच्छाया अवट्ठगोलावलिच्छाया गोलपुंजच्छाया अवट्ठगोलपुंजच्छाया २५ ॥ २९ ॥ **णवमं पाहुडं समत्तं ॥ ९ ॥**

दसमं पाहुडं

ता जोगेति वत्थुस्स आवलियाणिवाए आहितेति वएज्जा, ता कहं ते जोगेति वत्थुस्स आवलियाणिवाए आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता कत्तियाइया भरणिपज्जवसाणा प० एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता महाइया अस्सेसपज्जवसाणा पण्णत्ता एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता धणिट्ठाइया सवणपज्जवसाणा पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता अस्सिणीआइया रेवइपज्जवसाणा प० एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता भरणीआइया अस्सिणीपज्जवसाणा० एगे एवमाहंसु ५, वयं पुण एवं वयामो—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता अभिईआइया उत्तरासाढापज्जवसाणा पण्णत्ता, तंजहा—अभिई सवणो जाव उत्तरासाढा ॥ ३० ॥

दसमस्स पाहुडस्स पढमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१॥

ता कहं ते मुहुत्ता आहितेति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, अत्थि णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णं पणयालीसे मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ते जे णं णवमुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, कयरे णक्खत्ता जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, कयरे णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, कयरे णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जे से णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ से णं एगे अभीई, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तं०—सयभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा साई जेट्ठा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्तं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं पण्णरस, तं०—सवणे धणिट्ठा पुव्वाभद्दवया रेवई अस्सिणी कत्तिया मिगसिरपुस्सा महा पुव्वाफग्गुणी हत्थो चित्ता अणुराहा मूलो पुव्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा—उत्तराभद्दवया रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा ॥ ३१ ॥ ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएइ, अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएइ, कयरे णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसमुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, कयरे णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, कयरे णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति,ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जे से णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएइ से णं एगे अभीई, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा—सयभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा साई जेट्ठा, तत्थ जे ते···तेरस अहोरत्ते दुवालस य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं पण्णरस, तंजहा—सवणो धणिट्ठा पुव्वाभद्दवया रेवई अस्सिणी कत्तिया मिगसिरं पूसो महा पुव्वाफग्गुणी हत्थो चित्ता अणुराहा मूलो पुव्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं वीसं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा–उत्तराभद्दवया रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा ॥ ३२ ॥ **दसमस्स पाहुडस्स बिइयं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-२ ॥**

ता कहं ते एवंभागा आहितेति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता प०, अत्थि णक्खत्ता पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता प०, अत्थि णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता प०,अत्थि णक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढक्खेत्ता पणयालीसं मुहुत्ता प०,ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता० पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता प० जाव कयरे णक्खत्ता० उभयंभागा दिवड्ढक्खेत्ता पणयालीसइमुहुत्ता प०? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता प० ते णं छ, तंजहा–पुव्वाफग्गुणी मूलो पुव्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खत्ता० पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता प० ते णं दस, तंजहा–अभिई सवणो धणिट्ठा रेवई अस्सिणी मिगसिरं पूसो हत्थो चित्ता अणुराहा, तत्थ जे ते णक्खत्ता० णत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता प० ते णं छ, तंजहा–सयभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा साई जेट्ठा, तत्थ जे ते णक्खत्ता० उभयंभागा दिवड्ढक्खेत्ता पणयालीसं मुहुत्ता प० ते णं छ, तंजहा–उत्तराभद्दवया रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा ॥ ३३ ॥ **दसमरस पाहुडस्स तइयं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-३॥**

ता कहं ते जोगस्स आई आहितेति वएज्जा ? ता अभीईसवणा खलु दुवे णक्खत्ता पच्छाभागा समक्खेत्ता साइरेगऊयालीसइमुहुत्ता तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, तओ पच्छा अवरं साइरेयं दिवसं, एवं खलु अभिईसवणा दुवे णक्खत्ता एगराइं एगं च साइरेगं दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टंति जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं धणिट्ठाणं समप्पेंति, ता धणिट्ठा खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ २ त्ता तओ पच्छा राइं अवरं च दिवसं, एवं खलु धणिट्ठा णक्खत्ते एगं च राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं सयभिसयाणं समप्पेइ, ता सयभिसया खलु णक्खत्ते णत्तंभागे अवड्ढक्खेत्ते पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ णो लभइ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अवरं दिवसं, एवं खलु सयभिसया णक्खत्ते एगं राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं पुव्वाणं पोट्ठवयाणं समप्पेइ, ता पुव्वापोट्ठवया खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरराइं, एवं खलु पुव्वापोट्ठवया णक्खेत्ते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ २ त्ता जोयं अणुपरियट्टइ २ त्ता पाओ चंदं उत्तरापोट्ठवयाणं समप्पेइ, ता उत्तरापोट्ठवया खलु णक्खत्ते उभयंभागे दिवड्ढक्खेत्ते पणयालीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ अवरं च राइं तओ पच्छा अवरं दिवसं, एवं खलु उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते दो दिवसे एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ २ त्ता सायं चंदं रेवेईणं समप्पेइ, ता रेवई खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरं दिवसं, एवं खलु रेवई णक्खत्ते एगं राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ २ त्ता जोयं अणुपरियट्टइ २ त्ता सायं चंदं अस्सिणीणं समप्पेइ, ता अस्सिणी खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरं दिवसं, एवं खलु अस्सिणी णक्खत्ते एगं च राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ २ त्ता जोयं अणुपरियट्टइ २ त्ता सायं चंदं भरणीणं समप्पेइ, ता भरणी खलु णक्खत्ते णत्तंभागे अवड्ढक्खेत्ते पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, णो लभइ अवरं दिवसं, एवं खलु भरणी णक्खत्ते एगं राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ २ त्ता जोयं अणुपरियट्टइ २ त्ता पाओ चंदं कत्तियाणं समप्पेइ, ता कत्तिया खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा राइं, एवं खलु कत्तिया णक्खत्ते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ २ त्ता जोयं अणुपरियट्टइ २ त्ता पाओ चंदं रोहिणीणं समप्पेइ, रोहिणी जहा उत्तरभद्दवया मिगसिरं जहा धणिट्ठा अद्दा जहा सयभिसया पुणव्वसू जहा उत्तराभद्दवया पुस्सो जहा धणिट्ठा अस्सेसा जहा सयभिसया महा जहा पुव्वाफग्गुणी पुव्वाफग्गुणी जहा पुव्वाभद्दवया उत्तराफग्गुणी जहा उत्तराभद्दवया हत्थो चित्ता य जहा धणिट्ठा साई जहा सयभिसया विसाहा जहा उत्तराभद्दवया अणुराहा जहा धणिट्ठा सयभिसया मूला पुव्वासाढा य जहा पुव्वाभद्दवया उत्तरासाढा जहा उत्तराभद्दवया ॥ ३४ ॥

दसमस्स पाहुडस्स चउत्थं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-४॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ता कहं ते कुला उवकुला कुलोवकुला आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमे बारस कुला बारस उवकुला चत्तारि कुलोवकुला प०, बारस कुला०, तंजहा–धणिट्ठाकुलं उत्तराभद्दवयाकुलं अस्सिणीकुलं कत्तियाकुलं संठाणाकुलं पुस्साकुलं महाकुलं उत्तराफग्गुणीकुलं चित्ताकुलं विसाहाकुलं मूलाकुलं उत्तरासाढाकुलं, बारस उवकुला०, तंजहा–सवणो उवकुलं पुव्वापुट्ठवयाउवकुलं रेवईउवकुलं भरणीउवकुलं रोहिणीउवकुलं पुणव्वसूउवकुलं अस्सेसाउवकुलं पुव्वाफग्गुणीउवकुलं हत्थाउवकुलं साईउवकुलं जेट्ठाउवकुलं पुव्वासाढाउवकुलं, चत्तारि कुलोवकुला०, तंजहा–अभीईकुलोवकुलं सयभिसयाकुलोवकुलं अद्दाकुलोवकुलं अणुराहाकुलोवकुलं ॥ ३५ ॥ **दसमस्स पाहुडस्स पंचमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-५॥**

ता कहं ते पुण्णिमासिणी आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ बारस पुण्णिमासिणीओ बारस अमावासाओ पण्णत्ताओ, तंजहा–सावित्ती पोट्ठवई आसोया कत्तिया मग्गसिरी पोसी माही फग्गुणी चेत्ती वेसाही जेट्ठामूली आसाढी, ता सावित्तिण्णं पुण्णिमासिं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–अभिई सवणो धणिट्ठा, पुट्ठवइण्णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–सयभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया, ता आसोइण्णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–रेवई य अस्सिणी य, ता कत्तियण्णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–भरणी कत्तिया य, ता मग्गसिरीपुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–रोहिणी मिगसिरो य, ता पोसिण्णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–अद्दा पुणव्वसू पुस्सो, ता माहिण्णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं०–अस्सेसा महा य, ता फग्गुणिण्णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं०–पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी य, ता चेत्तिण्णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि०, तं०–हत्थो चित्ता य, ता वेसाहिण्णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं०–साई विसाहा य, ता जेट्ठामूलिण्णं पुण्णिमासिणिं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं०–अणुराहा जेट्ठा मूलो, ता आसाढिण्णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दो णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–पुव्वासाढा उत्तरासाढा ॥३६॥ [णाउमिह अमावासं जइ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इच्छसि कम्मि होइ रिक्खम्मि । अवहारं ठाविज्जा तत्तियरूवेहिं संगुणए ॥ १ ॥ छावट्ठी य मुहुत्ता बिसट्ठिभागा य पंच पडिपुण्णा । बासट्ठिभागसत्तट्ठिगो य इक्को हवइ भागो ॥२॥ एयमवहाररासिं इच्छअमावाससंगुणं कुज्जा । णक्खत्ताणं एत्तो सोहणगविहिं णिसामेह ॥३॥ बावीसं च मुहुत्ता छायालीसं बिसट्ठिभागा य । एयं पुणव्वसुस्स य सोहयव्वं हवइ वुच्छं ॥४॥ बावत्तरं सयं फग्गुणीणं बाणउइय बे विसाहासु । चत्तारि य बायाला सोज्झा उ उत्तरासाढा ॥ ५ ॥ एयं पुणव्वसुस्स य बिसट्ठिभागसहियं तु सोहणगं । इत्तो अभिईआइं बिइयं वुच्छामि सोहणगं ॥ ६ ॥ अभिइस्स णव मुहुत्ता बिसट्ठिभागा य हुंति चउवीसं । छावट्ठी असमत्ता भागा सत्तट्ठिछेयकया ॥७॥ उगुणट्ठं पोट्ठवयाइसु चेव णवोत्तरं च रोहिणिया । तिसु णव-णवएसु भवे पुणव्वसू फग्गुणीओ य ॥८॥ पंचेव उगुणपण्णं सयाइ उगुणुत्तराइं छच्चेव । सोज्झाणि विसाहासुं मूले सत्तेव चोयाला ॥ ९ ॥ अट्ठसय उगुणवीसा सोहणगं उत्तराण साढाणं । चउवीसं खलु भागा छावट्ठी चुण्णियाओ य ॥ १० ॥ एयाइ सोहइत्ता जं सेसं तं हवेइ णक्खत्तं । इत्थं करेइ उडुवइ सूरेण समं अमा-वासं ॥११॥ इच्छापुण्णिमगुणिओ अवहारो सोत्थं होइ कायव्वो । तं चेव य सोहणगं अभिईआइं तु कायव्वं ॥ १२ ॥ सुद्धंमि य सोहणगे जं सेसं तं भविज्ज णक्खत्तं । तत्थ य करेइ उडुवइ पडिपुण्णो पुण्णिम विउलं ॥१३॥] ता साविट्ठिण्णं पुण्णिमासिणिं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ? ता कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलं जोएमाणे धणिट्ठा णक्खत्ते० उवकुलं जोएमाणे सवणे णक्खत्ते जोएइ, कुलोवकुलं जोएमाणे अभिई णक्खत्ते जोएइ, ता साविट्ठि० पुण्णिमं कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी पुण्णिमा जुत्तात्ति वत्तव्वं सिया, ता पोट्ठवइण्णं पुण्णिमं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं वा जोएइ ? ता कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलं जोएमाणे उत्तरा-पोट्ठवया णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे पुव्वापुट्ठवया णक्खत्ते जोएइ, कुलोव-कुलं जोएमाणे सयभिसया णक्खत्ते जोएइ, पोट्ठवइण्णं पुण्णमासिणिं कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता २ पुट्ठवया पुण्णिमा जुत्तात्ति वत्तव्वं सिया, ता आसोइं णं पुण्णिमासिणिं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ? ता कुलंपि जोएइ उवकुलंपि जोएइ णो लब्भइ कुलोवकुलं,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कुलं जोएमाणे अस्सिणी णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे रेवई णक्खत्ते जोएइ, आसोइं णं पुण्णिमं कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता अस्सोई णं पुण्णिमा जुत्तति वत्तव्वं सिया, एवं णेयव्वाउ, पोसं पुण्णिमं जेट्ठामूलं पुण्णिमं च कुलोवकुलंपि जोएइ, अवसेसासु णत्थि कुलोवकुलं जाव आसाढी पुण्णिमा जुत्तति वत्तव्वं सिया। ता सावित्ठिं णं अमावासं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा—अस्सेसा य महा य, एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं, पोट्ठवयं दो णक्खत्ता जोएंति, तंजहा—पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी, अस्सोइं दो० हत्थो चित्ता य कत्तियं० साई विसाहा य, मग्गसिरं० अणुराहा जेट्ठा मूलो, पोसिं० पुव्वासाढा उत्तरासाढा, माहिं० अभीई सवणो धणिट्ठा, फग्गुणिं० सयभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया, चेत्तिं० रेवई अस्सिणी य, विसाहिं० भरणी कत्तिया य, जेट्ठामूलं० रोहिणी मिगसिरं च ता आसाढिं णं अमावासिं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं०—अद्दा पुणव्वसू पुस्सो, ता सावित्ठिं णं अमावासं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ? ता कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ णो लब्भइ कुलोवकुलं, कुलं जोएमाणे महा णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे असिलेसा० जोएइ, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता सावित्ठी अमावासा जुत्तति वत्तव्वं सिया, एवं णेयव्वं, णवरं मग्गसिराए माहीए फग्गुणीए आसाढीए य अमावासाए कुलोवकुलंपि जोएइ, सेसेसु णत्थि जाव आसाढी अमावासा जुत्तति वत्तव्वं सिया ॥३७॥ **दसमस्स पाहुडस्स छट्ठं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-६॥**

ता कहं ते सण्णिवाए आहिएति वएज्जा ? ता जया णं सावित्ठी पुण्णिमा भवइ तया णं माही अमावासा भवइ, जया णं माही पुण्णिमा भवइ तया णं सावित्ठी अमावासा भवइ, जया णं पुट्ठवई पुण्णिमा भवइ तया णं फग्गुणी अमावासा भवइ, जया णं फग्गुणी पुण्णिमा भवइ तया णं पुट्ठवई अमावासा भवइ, जया णं आसोई पुण्णिमा भवइ तया णं चेत्ती अमावासा भवइ, जया णं चेत्ती पुण्णिमा भवइ तया णं आसोई अमावासा भवइ, जया णं कत्तिई पुण्णिमा भवइ तया णं वेसाही अमावासा भवइ, जया णं वेसाही पुण्णिमा भवइ तया णं कत्तिया अमावासा भवइ, जया णं मग्गसिरी पुण्णिमा भवइ तया णं जेट्ठामूली अमावासा भवइ, जया णं जेट्ठामूली पुण्णिमा भवइ तया णं मग्गसिरी अमावासा भवइ, जया णं पोसी पुण्णिमा भवइ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तया णं आसाढी अमावासा भवइ, जया णं आसाढी पुण्णिमा भवइ तया णं पोसी अमावासा भवइ ॥ ३८ ॥ **दसमस्स पाहुडस्स सत्तमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-७॥**

ता कहं ते णक्खत्तसंठिई आहितेति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीईणक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ? ता गोसीसावलिसंठिए पण्णत्ते, ता सवणे णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ? ता काहारसंठिए प०, धणिट्ठाणक्खत्ते सउणि-पलीणगसंठिए, सयभिसयाणक्खत्ते पुप्फोवयारसंठिए, पुव्वापोट्ठवयाणक्खत्ते अवड्ढ-वावियसंठिए, एवं उत्तरावि, रेवईणक्खत्ते णावासंठिए, अस्सिणीणक्खत्ते आसक्खंध-संठिए, भरणीणक्खत्ते भगसंठिए, कत्तियाणक्खत्ते छुरधरगसंठिए, रोहिणीणक्खत्ते सगडुद्धिसंठिए, मिगसिराणक्खत्ते मिगसीसावलिसंठिए, अद्दाणक्खत्ते रुहिरबिंदु-संठिए, पुणव्वसूणक्खत्ते तुलासंठिए, पुप्फे णक्खत्ते वद्धमाणसंठिए, अस्सेसाणक्खत्ते पडागासंठिए, महाणक्खत्ते पागारसंठिए, पुव्वाफग्गुणीणक्खत्ते अद्धपलियंकसंठिए, एवं उत्तरावि, हत्थे णक्खत्ते हत्थसंठिए, चित्ताणक्खत्ते मुहफुल्लसंठिए, साईणक्खत्ते खीलगसंठिए, विसाहाणक्खत्ते दामणिसंठिए, अणुराहाणक्खत्ते एगावलिसंठिए, जेट्ठाणक्खत्ते गयदंतसंठिए, मूले णक्खत्ते विच्छुयलंगोलसंठिए, पुव्वासाढाणक्खत्ते गयविक्कमसंठिए, उत्तरासाढाणक्खत्ते सीहसंठिए प० ॥३९॥ **दसमस्स पाहु-डस्स अट्ठमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-८॥**

ता कहं ते तारग्गे आहिएति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीईणक्खत्ते कइतारे प० ? ता तितारे पण्णत्ते, सवणे णक्खत्ते तितारे धणिट्ठा-णक्खत्ते पणतारे, सयभिसयाणक्खत्ते सयतारे पुव्वापोट्ठवयाणक्खत्ते दुतारे, एवं उत्त-रावि, रेवई० बत्तीसइतारे, अस्सिणीणक्खत्ते तितारे, भरणी तितारे, कत्तिया छत्तारे, रोहिणी पंचतारे, मिगसिरे तितारे, अद्दा एगतारे, पुणव्वसू पंचतारे, पुस्से तितारे, अस्सेसा छत्तारे, महा सत्ततारे, पुव्वाफग्गुणी दुतारे, एवं उत्तरावि, हत्थे पंचतारे, चित्ता एगतारे, साई एगतारे, विसाहा पंचतारे, अणुराहा चउतारे, जेट्ठा तितारे, मूले एगतारे, पुव्वासाढा चउतारे, उत्तरासाढा चउतारे ॥ ४० ॥ **दसमस्स पाहुडस्स णवमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-९॥**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ता कहं ते णेया आहितेति वएज्जा ? ता वासाणं पढमं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तंजहा–उत्तरासाढा अभिई सवणो धणिट्ठा, उत्तरासाढा चोद्दस अहोरत्ते णेइ, अभिई सत्त अहोरत्ते णेइ, सवणे अट्ठ अहोरत्ते णेइ, धणिट्ठा एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाइं चत्तारि य अंगुलाइं पोरिसी भवइ, ता वासाणं दोच्चं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तंजहा–धणिट्ठा सयभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया धणिट्ठा चोद्दस अहोरत्ते णेइ, सयभिसया सत्त अहोरत्ते णेइ, पुव्वापोट्ठवया अट्ठ अहोरत्ते णेइ, उत्तरापोट्ठवया एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि अट्ठंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाइं अट्ठ य अंगुलाइं पोरिसी भवइ, ता वासाणं तइयं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं०–उत्तरापोट्ठवया रेवई अस्सिणी, उत्तरापोट्ठवया चोद्दस अहोरत्ते णेइ, रेवई पण्णरस अहोरत्ते णेइ, अस्सिणी एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमदिवसे लेहट्ठाइं तिण्णि पयाइं पोरिसी भवइ, ता वासाणं चउत्थं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं०–अस्सिणी भरणी कत्तिया, अस्सिणी चउद्दस अहोरत्ते णेइ, भरणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ, कत्तिया एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि सोलसंगुलाए पोरिसिच्छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं चत्तारि य अंगुलाइं पोरिसी भवइ। ता हेमंताणं पढमं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं०–कत्तिया रोहिणी संठाणा, कत्तिया चोद्दस अहोरत्ते णेइ, रोहिणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ, संठाणा एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं अट्ठ य अंगुलाइं पोरिसी भवइ, ता हेमंताणं दोच्चं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं०–संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो, संठाणा चोद्दस अहोरत्ते णेइ, अद्दा सत्त अहोरत्ते णेइ, पुणव्वसू अट्ठ अहोरत्ते णेइ, पुस्से एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि चउव्वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं चत्तारि पयाइं पोरिसी भवइ, ता हेमंताणं तइयं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं०–पुस्से अस्सेसा महा, पुस्से चोद्दस अहोरत्ते णेइ, अस्सेसा पंचदस अहोरत्ते णेइ, महा एगं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि वीसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं अट्ठंगुलाइं पोरिसी भवइ, ता हेमंताणं चउत्थं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं०—महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी, महा चोद्दस अहोरत्ते णेइ, पुव्वाफग्गुणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ, उत्तराफग्गुणी एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि सोलसअंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं चत्तारि य अंगुलाइं पोरिसी भवइ। ता गिम्हाणं पढमं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं०—उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता, उत्तराफग्गुणी चोद्दस अहोरत्ते णेइ, हत्थो पण्णरस अहोरत्ते णेइ, चित्ता एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं तिण्णि पयाइं पोरिसी भवइ, ता गिम्हाणं बिइयं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं०—चित्ता साई विसाहा, चित्ता चोद्दस अहोरत्ते णेइ, साई पण्णरस अहोरत्ते णेइ, विसाहा एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि अट्ठंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाइं अट्ठ य अंगुलाइं पोरिसी भवइ, ता गिम्हाणं तइयं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता ति णक्खत्ता णेंति, तं०—विसाहा अणुराहा जेट्ठामूलो, विसाहा चोद्दस अहोरत्ते णेइ, अणुराहा पण्णरस०, जेट्ठामूलो एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाणि य चत्तारि अंगुलाणि पोरिसी भवइ, ता गिम्हाणं चउत्थं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खता णेंति, तं०—मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा, मूलो चोद्दस अहोरत्ते णेइ, पुव्वासाढा पण्णरस अहोरत्ते णेइ, उत्तरासाढा एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि जहाए समचउरंससंठियाए णग्गोहपरिमंडलाए सकायमणुरंगिणीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं दो पयाइं पोरिसी भवइ ॥४१॥

दसमस्स पाहुडस्स दसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-१०॥

ता कहं ते चंदमग्गा आहितेति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि पमद्दंपि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ते जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोयं जोएइ, ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति तहेव जाव कयरे णक्खत्ते जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोयं जोएइ ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं जे णं णक्खत्ता सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति ते णं छ, तं०—संठाणा अद्दा पुस्सो अस्सेसा हत्थो मूलो, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोयं जोएंति ते णं बारस, तंजहा—अभिई सवणो धणिट्ठा सयभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तरापोट्ठवया रेवई अस्सिणी भरणी पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी साई १२, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति ते णं सत्त, तंजहा—कत्तिया रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराहा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति ताओ णं दो आसाढाओ सव्वबाहिरे मंडले जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोएस्संति वा, तत्थ जे से णक्खत्ते जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोयं जोएइ सा णं एगा जेट्ठा ॥ ४२ ॥ ता कइ ते चंदमंडला पण्णत्ता ? ता पण्णरस चंदमंडला पण्णत्ता, ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया०, अत्थि चंदमंडला जे णं रविससिणक्खत्ताणं सामण्णा भवंति, अत्थि चंदमंडला जे णं सया आइच्चेहिं विरहिया, ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं कयरे चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया जाव कयरे चंदमंडला जे णं सया आइच्चविरहिया ? ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया ते णं अट्ठ, तंजहा—पढमे चंदमंडले तइए चंदमंडले छट्ठे चंदमंडले सत्तमे चंदमंडले अट्ठमे चंदमंडले दसमे चंदमंडले एक्कारसमे चंदमंडले पण्णरसमे चंदमंडले, तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया ते णं सत्त, तंजहा—बिइए चंदमंडले चउत्थे चंदमंडले पंचमे चंदमंडले णवमे चंदमंडले बारसमे चंदमंडले तेरसमे चंदमंडले चउद्दसमे चंदमंडले, तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं रविससिणक्खत्ताणं सामण्णा भवंति ते णं चत्तारि, तंजहा—पढमे चंदमंडले बीए चंदमंडले जाव पण्णरसमे चंदमंडले, तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सया आइच्चविरहिया ते णं पंच, तंजहा—दुइए चंदमंडले सत्तमे चंदमंडले अट्ठमे चंदमंडले णवमे चंदमंडले दसमे चंदमंडले ॥४३॥ **दसमस्स पाहुडस्स एक्कारसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-११ ॥**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ता कहं ते देवयाणं अज्झयणा आहितात्ति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिईणक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता बंभदेवयाए पण्णत्ते, सवणे० विण्हु० धणिट्ठाणक्खत्ते वसुदेवयाए०, सयभिसयाणक्खत्ते वरुण०, पुव्वापोट्ठ० अयदे०, उत्तरापोट्ठवयाणक्खत्ते अभिवड्ढि०, एवं सव्वेवि पुच्छिज्जंति, रेवई पुस्सदेवया०, अस्सिणी अस्सदेवया०, भरणी जमदेवया०, कत्तिया अग्गिदेवया० रोहिणी पयावइदेवया०, संठाणा सोमदेवयाए०, अद्दा रुद्ददेवयाए०, पुणव्वसू अदिति०, पुस्सो बहस्सइ०, अस्सेसा सप्प०, महा पिइ०, पुव्वाफग्गुणी भग०, उत्तराफग्गुणी अज्जम०, हत्थे सविया०, चित्ता तट्ठ०, साई वाउ०, विसाहा इंदग्गी०, अणुराहा मित्त०, जेट्ठा इंद०, मूले णिरइ०, पुव्वासाढा आउ०, उत्तरासाढा० विस्सदेवयाए पण्णत्ते ॥४४॥

दसमस्स पाहुडस्स बारसमं पाहुडपाहुड समत्तं ॥१०-१२॥

ता कहं ते मुहुत्ताणं णामधेज्जा आहितात्ति वएज्जा ? ता एगमेगस्स णं अहोरत्तस्स तीसं मुहुत्ता प०, तंजहा—रुद्दे सेए मित्ते वाउ सुगी(पी)ए तहेव अभिचंदे। माहिंद बलव्व बंभे बहुसच्चे चेव ईसाणे ॥ १ ॥ तट्ठे य भावियप्पा वेसमणे वारुणे य आणंदे। विजए य वीससेणे पयावई चेव उवसामे ॥ २ ॥ गंधव्व अग्गिवेसे सयरिसहे आयवं च अममे य। अणवं भोमे रिसहे सव्वट्ठे रक्खसे चेव ॥ ३ ॥ ४५ ॥

दसमस्स पाहुडस्स तेरसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१३॥

ता कहं ते दिवसा आहितात्ति वएज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस दिवसा पण्णत्ता, तं०—पडिवादिवसे बिइयादिवसे जाव पण्णरसीदिवसे, ता एएसि णं पण्णरसण्हं दिवसाणं पण्णरस णामधेज्जा प०, तं०—पुव्वंगे सिद्धमणोरमे य तत्तो मणोरहे(हरे)चेव। जसभद्दे य जसोधर य सव्वकामसमिद्धे ॥ १ ॥ इंदमुद्धाभिसित्ते य सोमणस धणंजए य बोद्धव्वे। अत्थसिद्धे अभिजाए अच्चसणे सयंजए चेव ॥ २ ॥ अग्गिवेसे उवसमे दिवसाणं णामधेज्जाइं। ता कहं ते राईओ आहितात्ति वएज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस राईओ पण्णत्ताओ, तंजहा—पडिवाराई बिइयाराई जाव पण्णरसीराई, ता एयासि णं पण्णरसण्हं राईणं पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं०—उत्तमा य सुणक्खत्ता, एलावच्चा जसोधरा। सोमणसा चेव तहा सिरिसंभूया य बोद्धव्वा ॥ १ ॥ विजया य वेजयंति जयंति अपराजिया य इच्छा य। समाहारा चेव तहा तेया य तहा य अइतेया ॥ १ ॥ देवाणंदा णिरई रयणीणं णामधेज्जाइं ॥ ४६ ॥ **दसमस्स पाहुडस्स चउद्दसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१४ ॥**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ता कहं ते तिही आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमा दुविहा तिही पण्णत्ता, तंजहा–दिवसतिही य, राईतिही य, ता कहं ते दिवसतिही आहितेति वएज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस २ दिवसतिही पण्णत्ता, तं०–णंदे भद्दे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स पंचमी पुणरवि णंदे भद्दे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स दसमी पुणरवि णंदे भद्दे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स पण्णरसी, एवं ते तिगुणा तिहीओ सव्वेसिं दिवसाणं, ता कहं ते राईतिही आहितेति वएज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस राईतिही प०, तं०–उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा पुणरवि उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा पुणरवि उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा, एए तिगुणा तिहीओ सव्वासिं राईणं ॥ ४७ ॥ **दसमस्स पाहुडस्स पण्णरसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१५ ॥**

ता कहं ते गोत्ता आहितेति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिईणक्खत्ते किंगोत्ते प० ? ता मोग्गल्लायणसगोत्ते पण्णत्ते, सवणे० संखायण०, धणिट्ठा० अग्गितावस०, सयभिसया० कण्णिलायणसगोत्ते, पुव्वापोट्ठवया० जोउकण्णियसगोत्ते, उत्तरापोट्ठवया० धणंजयसगोत्ते, रेवईणक्खत्ते पुस्सायणसगोत्ते, अस्सिणीणक्खत्ते अस्सायणसगोत्ते, भरणीणक्खत्ते भग्गवेससगोत्ते, कत्तियाणक्खत्ते अग्गिवेससगोत्ते, रोहिणीणक्खत्ते गोयम०, संठाणाणक्खत्ते भारद्दायसगोत्ते, अद्दाणक्खत्ते लोहिच्चायणसगोत्ते, पुणव्वसूणक्खत्ते वासिट्ठसगोत्ते, पुस्से० उमजायणसगोत्ते, अस्सेसाणक्खत्ते मंडव्वायणसगोत्ते, महाणक्खत्ते पिंगायणसगोत्ते, पुव्वाफग्गुणीणक्खत्ते गोवल्लायणसगोत्ते, उत्तराफग्गुणीणक्खत्ते कासव०, हत्थे० कोसिय०, चित्ताणक्खत्ते दभियाणस्सगोत्ते, साईणक्खत्ते चामरच्छायणसगोत्ते, विसाहाणक्खत्ते सुंगायणसगोत्ते अणुराहाणक्खत्ते गोलव्वायणसगोत्ते, जेट्ठाणक्खत्ते तिगिच्छायणसगोत्ते, मूले णक्खत्ते कच्चायणसगोत्ते, पुव्वासाढाणक्खत्ते वज्झियायणसगोत्ते, उत्तरासाढाणक्खत्ते वग्घावच्चसगोत्ते ॥ ४८ ॥ **दसमस्स पाहुडस्स सोलसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१६ ॥**

ता कहं ते भोयणा आहितेति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कत्तियाहिं दधिणा भोच्चा कज्जं साधेंति, रोहिणीहिं वसभमंसं+ भोच्चा कज्जं साधेंति, संठाणाहिं मिगमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, अद्दाहिं णवणीएणं भोच्चा कज्जं साधेंति, पुणव्वसुणा घएणं भोच्चा कज्जं साधेंति, पुस्सेणं खीरेणं भोच्चा कज्जं साधेंति, अस्से

+ स्पष्टीकरण के लिये—सम्पादकीय देखें।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

साए दीगवमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, महाहिं कसोतिं भोच्चा कज्जं साधेंति, पुव्वाहिं फग्गुणीहिं मेदगमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, उत्तराहिं फग्गुणीहिं णक्खीमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, हत्थेणं वत्थाणीयपणेणं भोच्चा कज्जं साधेंति, चित्ताहिं मुग्गसूवेणं भोच्चा कज्जं साधेंति, साइणा फलाइं भोच्चा कज्जं साधेंति, विसाहाहिं आसित्तियाओ भोच्चा कज्जं साधेंति, अणुराहाहिं मिस्साकूरं भोच्चा कज्जं साधेंति, जेट्ठाहिं कोलट्ठिएणं भोच्चा कज्जं साधेंति, मूलेणं मूलगसागेणं भोच्चा कज्जं साधेंति, पुव्वाहिं आसाढाहिं आमलगसरीरेणं भोच्चा कज्जं साधेंति, उत्तराहिं आसाढाहिं बिल्लेहिं भोच्चा कज्जं साधेंति, अभीइणा पुप्फेहिं भोच्चा कज्जं साधेंति, सवणेणं खीरेणं भोच्चा कज्जं साधेंति, धणिट्ठाहिं जूसेणं भोच्चा कज्जं साधेंति, सयभिसयाए तुवरीओ भोच्चा कज्जं साधेंति, पुव्वाहिं पुट्ठवयाहिं कारिल्लएहिं भोच्चा कज्जं साधेंति, उत्तराहिं पुट्ठवयाहिं वराहमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, रेवईहिं जलयरमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, अस्सिणीहिं तित्तिरमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, भरणीहिं तिलतंडुलयं भोच्चा कज्जं साधेंति ॥४९॥

दसमस्स पाहुडस्स सत्तरसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-१७॥

ता कहं ते चारा आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमे दुविहा चारा पण्णत्ता, तं०-आइच्चचारा य चंदचारा य, ता कहं ते चंदचारा आहितेति वएज्जा ? ता पंच संवच्छरिए णं जुगे अभीइणक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, सवणे णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, एवं जाव उत्तरासाढाणक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ । ता कहं ते आइच्चचारा आहितेति वएज्जा ? ता पंच संवच्छरिए णं जुगे अभीईणक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोयं जोएइ, एवं जाव उत्तरासाढाणक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोयं जोएइ ॥ ५० ॥ **दसमस्स पाहुडस्स अट्ठारसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-१८॥**

ता कहं ते मासा आहितेति वएज्जा ? ता एगमेगस्स णं संवच्छरस्स बारस मासा पण्णत्ता, तेसिं च दुविहा णामधेज्जा पण्णत्ता, तं०-लोइया य लोउत्तरिया य, तत्थ लोइया णामा०, तं-सावणे भद्दवए आसोए जाव आसाढे, लोउत्तरिया णामा०, तं०-अभिणंदे पइट्ठे य, विजए पीइवद्धणे । सेज्जंसे य सिवे यावि, सिसिरेवि य हेमवं ॥१॥ णवमे वसंतमासे, दसमे कुसुमसंभवे । एक्कारसमे णिदाहो, वणविरोही य बारसे ॥२॥५१॥ **दसमस्स पाहुडस्स एगूणवीसइमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-१९॥**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ता कहं ते संवच्छरा आहितातिवएज्जा ? ता पंच संवच्छरा आहितातिवएज्जा, तं०—णक्खत्तसंवच्छरे जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे सणिच्छरसंवच्छरे ॥५२॥ ता णक्खत्तसंवच्छरे णं कइविहे प० ? ता णक्खत्तसंवच्छरे णं दुवालसविहे पण्णत्ते; तं०—सावणे भद्दवए जाव आसाढे, जं वा बहस्सइमहग्गहे दुवालसहिं संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेइ ॥ ५३ ॥० ता जुगसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—चंदे चंदे अभिवड्ढिए चंदे अभिवड्ढिए चेव, ता पढमस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा प०, दोच्चस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा प०, तच्चस्स णं अभिवड्ढियसंवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा प०, चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा प०, पंचमस्स णं अभिवड्ढियसंवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता, एवामेव सपुव्वावरेणं पंचसंवच्छरिए जुगे एगे चउवीसे पव्वसए भवतीति मक्खायं ॥५४॥० ता पमाणसंवच्छरे णं पंचविहे प०, तंजहा—णक्खत्ते चंदे उडू आइच्चे अभिवड्ढिए ॥ ५५ ॥० ता लक्खणसंवच्छरे णं पंचविहे प०, तं०—समगं णक्खत्ता जोयं जोएंति समगं उऊ परिणमंति । णच्चुण्हं णाइसीए बहुउदए होइ णक्खत्ते ॥१॥ ससि समग पुण्णमासिं जोएंता विसमचारिणक्खत्ता । कडुओ बहूदओ य तमाहु संवच्छरं चंदं ॥२॥ विसमं पवालिणो परिणमंति अणुऊसु दिंति पुप्फफलं । वासं ण सम्म वासइ तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥३॥ पुढविदगाणं च रसं पुप्फफलाणं च देइ आइच्चे । अप्पेणवि वासेणं सम्मं णिप्फज्जए सस्सं ॥४॥ आइच्चतेयतविया खणलवदिवसा उऊ परिणमंति । पूरेइ णिण्णथलए तमाहु अभिवड्ढियं जाण ॥ ५ ॥० ता सणिच्छरसंवच्छरे णं अट्ठावीसइविहे प०, तं०—अभीई सवणे जाव उत्तरासाढा, जं वा सणिच्छरे महग्गहे तीसाए संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेइ ॥ ५६ ॥

दसमस्स पाहुडस्स वीसइमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-२०॥

ता कहं ते जोइसस्स दारा आहितातिवएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु—ता कत्तियाइया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता महाइया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता धणिट्ठाइया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—ता अस्सिणीआइया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता भरणीआइया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता० ५ । तत्थ जे ते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एवमाहंसु–ता कत्तियाइया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु–तं०– कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा, महाइया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा–महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साई विसाहा, अणुराहाइया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा– अणुराहा जेट्ठा मूले पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई सवणो, धणिट्ठाइया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा–धणिट्ठा सयभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरा-पोट्ठवया रेवई अस्सिणी भरणी। तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता महाइया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु–तंजहा–महा पुव्वाफग्गुणी हत्थो चित्ता साई विसाहा, अणुराहाइया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा–अणुराहा जेट्ठा मूले पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई सवणे, धणिट्ठाइया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा–धणिट्ठा सयभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवई अस्सिणी भरणी, कत्तियाइया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा–कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा। तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता धणिट्ठाइया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु– तंजहा–धणिट्ठा सयभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवया रेवई अस्सिणी भरणी, कत्तियाइया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा–कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा, महाइया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा–महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साई विसाहा, अणुराहाइया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा–अणुराहा जेट्ठा मूले पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभीई सवणो। तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता अस्सिणी-आइया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता ते एवमाहंसु–तंजहा–अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू, पुस्साइया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा–पुस्सा अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता, साईआइया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा–साई विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूले पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभीईआइया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा–अभिई सवणो धणिट्ठा सयभिसया पुव्वा-भद्दवया उत्तराभद्दवया रेवई। तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता भरणीआइया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु–तंजहा–भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो, अस्सेसाइया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तंजहा–अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साई, विसाहाइया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तं०–विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई, सवणाइया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं०–सवणो धणिट्ठा सयभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवई अस्सिणी, एए एवमाहंसु, वयं पुण एवं वयामो–ता अभिईआइया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया प०, तंजहा–अभिई सवणो धणिट्ठा सयभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवई, अस्सिणीआइया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं०–अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू, पुस्साइया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तं०–पुस्सो अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता, साईआइया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं०–साई विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूले पुव्वासाढा उत्तरासाढा ॥ ५७ ॥ **दसमस्स पाहुडस्स एक्कवीसइमं पाहुडपाहुड समत्तं ॥ १०-२१ ॥**

ता कहं ते णक्खत्तविजए आहिएति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं०, ता जंबुद्दीवे णं दीवे दो चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, दो सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा, छप्पण्णं णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा ३, तंजहा–दो अभीई दो सवणा दो धणिट्ठा दो सयभिसया दो पुव्वापोट्ठवया दो उत्तरापोट्ठवया दो रेवई दो अस्सिणी दो भरणी दो कत्तिया दो रोहिणी दो संठाणा दो अद्दा दो पुणव्वसू दो पुस्सा दो अस्सेसाओ दो महा दो पुव्वाफग्गुणी दो उत्तराफग्गुणी दो हत्था दो चित्ता दो साई दो विसाहा दो अणुराहा दो जेट्ठा दो मूला दो पुव्वासाढा दो उत्तरासाढा, ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं तीसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, कयरे णक्खत्ता जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, कयरे णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, कयरे णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ? ता एएसि णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

छप्पण्णाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं दो अभीई, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तंजहा–दो सयभिसया दो भरणी दो अद्दा दो अस्सेसा दो साई दो जेट्ठा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं तीसं, तंजहा–दो सवणा दो धणिट्ठा दो पुव्वाभद्दवया दो रेवई दो अस्सिणी दो कत्तिया दो संठाणा दो पुस्सा दो महा दो पुव्वाफग्गुणी दो हत्था दो चित्ता दो अणुराहा दो मूला दो पुव्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तंजहा–दो उत्तरापोट्ठवया दो रोहिणी दो पुणव्वसू दो उत्तराफग्गुणी दो विसाहा दो उत्तरासाढा, ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारसमुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं तं चेव उच्चारेयव्वं, ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं दो अभीई, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तंजहा–दो सयभिसया दो अद्दा दो अस्सेसा दो साई दो विसाहा दो जेट्ठा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारसमुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं तीसं, तंजहा–दो सवणा जाव दो पुव्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तंजहा–दो उत्तरापोट्ठवया जाव दो उत्तरासाढा ॥५८॥ ता कहं ते सीमाविक्खंभे आहिएति वएज्जा ? ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जेसि णं छ सया तीसा सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो, अत्थि णक्खत्ता जेसि णं सहस्सं चोत्तरं सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो, अत्थि णक्खत्ता जेसि णं दो सया दसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो, अत्थि णक्खत्ता जेसि णं तिसहस्सं पंचदसुत्तरं सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो, ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जेसि णं छ सया तीसा तं चेव उच्चारेयव्वं जाव कयरे णक्खत्ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जेसि णं तिसहस्सं पंचदसुत्तरं सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो ? ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं छ सया तीसा सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं दो अभीई, तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं सहस्सं पंचुत्तरं सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं बारस, तंजहा–दो सयभिसया जाव दो जेट्ठा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं तीसं, तंजहा–दो सवणा जाव दो पुव्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं तिण्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं बारस, तं०–दो उत्तरापोट्ठवया जाव दो उत्तरासाढा ॥ ५९ ॥ ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं किं सया पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, किं सया सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, किं सया दुहओ पविसिय २ चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ? ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं ण किंमवि तं जं सया पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, णो सया सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, णो सया दुहओ पविसित्ता २ चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, णत्थि राइंदियाणं वुड्ढीए मुहुत्ताणं च चओवचएणं णण्णत्थ दोहिं अभीईहिं, ता एएणं दो अभीई पायंचिय पायंचिय चोत्तालीसं २ अमावासं जोएंति, णो चेव णं पुण्णिमासिणिं ॥ ६० ॥ तत्थ खलु इमाओ बावट्ठिं पुण्णिमासिणीओ बावट्ठिं अमावासाओ पण्णत्ताओ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुवत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से चंदे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि चंदे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुवत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से चंदे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि चंदो दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुवत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से चंदे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि चंदे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताओ पुण्णिमा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दोण्णि अट्ठारसए भागसए उवाइणावेत्ता एत्थ णं से चंदे दुवालसमं पुण्णिमासिणिं जोएइ, एवं खलु एएणुवाएणं ताओ २ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुवत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता तंसि २ देसंसि तं तं पुण्णिमासिणिं चंदे जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंबुद्दीवस्स णं० पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणिल्लंसि चउभागमंडलंसि सत्तावीसं चउभागे उवाइणावेत्ता अट्ठावीसइभागे वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहिं पच्चत्थिमिल्लं चउभागमंडलं असंपत्ते एत्थ णं से चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएइ॥६१॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणवइं भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से सूरिए पढमं पुण्णिमासिणिं जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउवीसेणं सएणं छेत्ता चउणवइभागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से सूरे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउइभागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से सूरे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएण छेत्ता अट्ठ छत्ताले भागसए उवाइणावेत्ता एत्थ णं से सूरे दुवालसमं पुण्णिमासिणिं जोएइ, एवं खलु एएणुवाएणं ताओ २ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउइ २ भागे उवाइणावेत्ता तंसि २ देसंसि तं तं पुण्णिमासिणिं सूरे जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंबुद्दीवस्स णं० पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता पुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणावेत्ता अट्ठावीसइमं भागं वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भागेहिं दोहि य कलाहिं दाहिणिल्लं चउभागमंडलं असंपत्ते एत्थ णं सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमं जोएइ ॥ ६२ ॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमबावट्ठिं अमावासं जोएइ ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से चंदे पढमं अमावासं जोएइ, एवं जेणेव अभिलावेणं चंदस्स पुण्णिमासिणीओ० तेणेव अभिलावेणं अमावासाओवि भाणियव्वाओ–बिइया तइया दुवालसमी, एवं खलु एएणुवाएणं ताओ २ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं २ भागे उवाइणावेत्ता तंसि २ देसंसि तं तं अमावासं० चंदे जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता सोलसभागे उक्कोवइत्ता एत्थ णं से चंदे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएइ ॥६३॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएइ ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउइभागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से सूरे पढमं अमावासं जोएइ, एवं जेणेव अभिलावेणं सूरियस्स पुण्णिमासिणीओ० तेणेव अभिलावेणं अमावासाओवि०, तंजहा–बिइया तइया दुवालसमी, एवं खलु एएणुवाएणं ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउइं २ भागे उवाइणावेत्ता तंसि २ देसंसि तं २ अमावासं० सूरे जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं पुच्छा, ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता सत्तालीसं भागे उक्कोवइत्ता एत्थ णं से सूरे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएइ ॥६४॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं(जोयं)जोएइ ? ता धणिट्ठाहिं,धणिट्ठाणं तिण्णि मुहुत्ता एगूणवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता पण्णट्ठिं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुव्वाफग्गुणीहिं, पुव्वाफग्गुणीणं अट्ठावीसं मुहुत्ता अट्ठतीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता दुबत्तीसं चुण्णियाभागा सेसा,ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं पोट्ठवयाहिं,उत्तराणं पोट्ठवयाणं सत्तावीसं मुहुत्ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चोद्दस य बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता बावट्ठिं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं,उत्तराफग्गुणीणं सत्त मुहुत्ता तेत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता एक्कवीसं चुण्णियाभागा सेसा,ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता अस्सिणीहिं, अस्सिणीणं एक्कवीसं मुहुत्ता णव य एगट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता तेवट्ठिं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ,? ता चित्ताहिं, चित्ताणं एक्को मुहुत्तो अट्ठावीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता तीसं चुण्णियाभागा सेसा, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं छदुवीसं मुहुत्ता छदुवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता चउप्पण्णं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलसमुहुत्ता अट्ठ य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता वीसं चुण्णियाभागा सेसा, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरमसमए, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुस्सेणं, पुस्सस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेयालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णियाभागा सेसा ॥६५॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता अस्सेसाहिं, अस्सेसाणं एक्के मुहुत्ते चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता छावट्ठिं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता अस्सेसाहिं चेव, अस्सेसाणं एक्को मुहुत्तो चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता छावट्ठिं चुण्णियाभागा सेसा, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं चत्तालीसं मुहुत्ता पणतीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता पण्णट्ठिं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं चेव फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं जहेव चंदस्स। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता हत्थेणं, हत्थस्स चत्तारि मुहुत्ता तीसं च बावट्ठि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता बावट्ठिं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता हत्थेणं चेव, हत्थस्स जहा चंदस्स, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता अद्दाहिं, अद्दाणं चत्तारि मुहुत्ता दस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता चउप्पण्णं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता अद्दाहिं चेव, अद्दाणं जहा चंदस्स । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठि अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स बावीसं मुहुत्ता बायालीसं च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुणव्वसुणा चेव, पुणव्वसुस्स णं जहा चंदस्स ॥ ६६ ॥ ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं अट्ठ एगूणवीसाइं मुहुत्तसयाइं चउवीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता बावट्ठिं चुण्णियाभागे उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे अण्णेणं सरिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ अण्णंसि देसंसि, ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं सोलस अट्ठत्तीसे मुहुत्तसयाइं अउणापण्णं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता पण्णट्ठिं चुण्णियाभागे उवाइणावेत्ता पुणरवि से णं चंदे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ अण्णंसि देसंसि, ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं चउप्पण्णमुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे अण्णेणं तारिसएणं चेव० जोयं जोएइ तंसि देसंसि, ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं एगं लक्खं णव य सहस्से अट्ठ य मुहुत्तसए उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि, ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं तिण्णि छावट्ठाइं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरिए अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि, ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएइ तंसि देसंसि से णं इमाइं सत्तवुवीसं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि, ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं अट्ठसत्त तीसाइं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे अण्णेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि, ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएइ जंसि देसंसि तेणं इमाइं छत्तीसं सट्ठाइं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

से सूरे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि ॥ ६७ ॥ ता जया णं इमे चंदे गइसमावण्णए भवइ तया णं इयरेवि चंदे गइसमावण्णए भवइ, जया णं इयरे चंदे गइसमावण्णए भवइ तया णं इमेवि चंदे गइसमावण्णए भवइ, ता जया णं इमे सूरिए गइसमावण्णे भवइ तया णं इयरेवि सूरिए गइसमावण्णे भवइ, जया णं इयरे सूरिए गइसमावण्णे भवइ तया णं इमेवि सूरिए गइसमावण्णे भवइ एवं गहेवि णक्खत्तेवि, ता जया णं इमे चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ तया णं इयरेवि चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ, जया णं इयरे चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ तया णं इमेवि चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ, एवं सूरेवि गहेवि णक्खत्तेवि, सयावि णं चंदा जुत्ता जोगेहिं सयावि णं सूरा जुत्ता जोगेहिं सयावि णं गहा जुत्ता जोगेहिं सयावि णं णक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं दुहओवि णं चंदा जुत्ता जोगेहिं दुहओवि णं सूरा जुत्ता जोगेहिं दुहओवि णं गहा जुत्ता जोगेहिं दुहओवि णं णक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं, मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउयाए सएहिं छेत्ता । इच्चेस णक्खत्ते खेत्तपरिभागे णक्खत्तविजए पाहुडेति आहिएत्ति–वेमि ॥ ६८ ॥ **दसमस्स पाहुडस्स बावीसइमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-२२॥ दसमं पाहुडं समत्तं ॥१०॥**

एक्कारसमं पाहुडं

ता कहं ते संवच्छराणाई आहिएति वएज्जा ? तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तंजहा–चंदे २ अभिवड्ढिए चंदे अभिवड्ढिए, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स के आई आहिएति वएज्जा ? ता जे णं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स आई अणंतरपुरक्खडे समए, ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएज्जा ? ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आई से णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए, तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं (जोगं) जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं छदुवीसं मुहुत्ता छदुवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता चउप्पण्णं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोल्स मुहुत्ता अट्ठ य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता वीसं चुण्णियाभागा सेसा । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स के आई आहिएति वएज्जा ? ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आई अणंतर-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुरक्खडे समए, ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएज्जा ? ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आई से णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए, तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुव्वाहिं आसाढाहिं, पुव्वाणं आसाढाणं सत्त मुहुत्ता तेवण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता इगतालीसं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं [जोयं] जोएइ ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स णं बायालीसं मुहुत्ता पणतीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता सत्त चुण्णियाभागा सेसा। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स के आई आहिएति वएज्जा ? ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आई अणंतरपुरक्खडे समए, ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएज्जा ? ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आई से णं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए, तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं तेरस मुहुत्ता तेरस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता सत्तावीसं च चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स दो मुहुत्ता छप्पण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता सट्ठी चुण्णियाभागा सेसा। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स के आई आहिएति वएज्जा ? ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आई अणंतरपुरक्खडे समए, ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएज्जा ? ता जे णं चरिमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आई से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए, तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चत्तालीसं मुहुत्ता चत्तालीसं च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता चउसट्ठी चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स अउणतीसं मुहुत्ता एक्कवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता सीयालीसं चुण्णियाभागा सेसा। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स के आई आहिएति वएज्जा ? ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आई अणंतरपुरक्खडे समए, ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएज्जा ? ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छर-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्स आई से णं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए, तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं० चरमसमए, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुस्सेणं, पुस्सस्स णं एक्कवीसं मुहुत्ता तेयालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णियाभागा सेसा ॥६९॥ **एक्कारसमं पाहुडं समत्तं ॥११॥**

बारसमं पाहुडं

ता कहं णं संवच्छरा आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तंजहा—णक्खत्ते चंदे उडू आइच्चे अभिवड्ढिए, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स णक्खत्तसंवच्छरस्स णक्खत्तमासे तीसइमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता सत्तावीसं राइंदियाइं एक्कवीसं च सत्तट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठसए एगूणवीसे मुहुत्ताणं सत्तावीसं सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा णक्खत्ते संवच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तिण्णि सत्तावीसे राइंदियसए एक्कावण्णं च सत्तट्ठिभागे राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता णव मुहुत्तसहस्सा अट्ठ य बत्तीसे मुहुत्तसए छप्पण्णं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स चंदे मासे तीसइमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता एगूणतीसं राइंदियाइं बत्तीसं बावट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठपंचासए मुहुत्ते तेत्तीसं च छावट्ठिभागे मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा चंदे संवच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसए दुवालस य बावट्ठिभागा राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता दस मुहुत्तसहस्साइं छच्च पणवीसे मुहुत्तसए पण्णासं च बावट्ठिभागे मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स उडुसंवच्छरस्स उडुमासे तीसइमुहुत्तेणं० गणिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तीसं राइंदियाणं राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एति वएज्जा ? ता णव मुहुत्तसयाइं मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा उडू संवच्छरे,ता से णं केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तिण्णि सट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा,ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता दस मुहुत्तसहस्साइं अट्ठ य सयाइं मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स आइच्चसंवच्छरस्स आइच्चे मासे तीसइमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तीसं राइंदियाइं अवड्ढभागं च राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता णव पण्णरस मुहुत्तसए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा आइच्चे संवच्छरे,ता से णं केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तिण्णि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता दस मुहुत्तस्स सहस्साइं णव असीए मुहुत्तसए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स अभिवड्ढिए मासे तीसइमुहुत्तेणं गणिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता एक्कतीसं राइंदियाइं एगूणतीसं च मुहुत्ता सत्तरस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता णव एगूणसट्ठे मुहुत्तसए सत्तरस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा अभिवड्ढियसंवच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तिण्णि तेसीए राइंदियसए एक्कवीसं च मुहुत्ता अट्ठारस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता एक्कारस मुहुत्तसहस्साइं पंच य एक्कारसे मुहुत्तसए अट्ठारस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ॥७०॥ ता केवइयं ते णोजुगे राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता सत्तरस एक्काणउए राइंदियसए एगूणवीसं च मुहुत्तं सत्तावण्णे बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता पणपण्णं चुण्णियाभागे राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तेपण्णमुहुत्तसहस्साइं सत्त य अउणापण्णे मुहुत्तसए सत्तावण्णं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता पणपण्णं चुण्णियाभागा मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता केवइए णं ते जुगप्पत्ते राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठतीसं राइंदियाइं दस य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुहुत्ता चत्तारि य बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता दुवालस चुण्णिया-भागे राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता एक्कारस पण्णासे मुहुत्तसए चत्तारि य बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता दुवालस चुण्णियाभागे मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता केवइयं जुगे राइंदिय-ग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठारसतीसे राइंदियसए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता चउप्पण्णं मुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसयाइं मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए बावट्ठिभागमुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता चउत्तीसं सयसहस्साइं अट्ठतीसं च बावट्ठिभागमुहुत्तसए बावट्ठिभागमुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ॥ ७१ ॥ ता कया णं एए आइच्चचंद-संवच्छरा समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएज्जा ? ता सट्ठि एए आइच्चमासा बावट्ठिं एए चंदमासा, एस णं अद्धा छक्खुत्तकडा दुवालसभइया तीसं एए आइच्च-संवच्छरा एक्कतीसं एए चंदसंवच्छरा, तया णं एए आइच्चचंदसंवच्छरा समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएज्जा। ता कया णं एए आइच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएज्जा ? ता सट्ठिं एए आइच्चमासा एगट्ठिं एए उडुमासा बावट्ठिं एए चंदमासा सत्तट्ठिं एए णक्खत्तमासा, एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा दुवालसभइया सट्ठिं एए आइच्चा संवच्छरा एगट्ठिं एए उडुसंवच्छरा बावट्ठिं एए चंदा संवच्छरा सत्तट्ठिं एए णक्खत्ता संवच्छरा, तया णं एए आइच्च-उडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएज्जा। ता कया णं एए अभिवड्ढियआइच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएज्जा ? ता सत्तावण्णं मासा सत्त य अहोरत्ता एक्कारस य मुहुत्ता तेवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स एए अभिवड्ढिया मासा सट्ठिं एए आइच्चमासा एगट्ठिं एए उडुमासा बावट्ठी एए चंदमासा सत्तट्ठिं एए णक्खत्तमासा, एस णं अद्धा छप्पण्णसयक्खुत्तकडा दुवालसभइया सत्त सया चोत्ताला एए णं अभिवड्ढिया संवच्छरा, सत्त सया असीया एए णं आइच्चा संवच्छरा, सत्त सया तेणउया एए णं उडुसंवच्छरा अट्ठसया छलुत्तरा एए णं चंदा संवच्छरा, एकसत्तरी अट्ठसया एए णं णक्खत्ता संवच्छरा तया णं एए अभिवड्ढिया आइच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएज्जा, ता णयट्ठयाए णं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसए दुवालस य बावट्ठिभागे राइंदियस्स आहिएति वएज्जा, ता अहातच्चेणं चंदे संवच्छरे तिण्णि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चउप्पण्णे राइंदियसए पंच य मुहुत्ते पण्णासं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिएति वएज्जा ॥७२॥ तत्थ खलु इमे छ उडू पण्णत्ता, तंजहा—पाउसे वरिसारत्ते सरए हेमंते वसंते गिम्हे, ता सव्वेवि णं एए चंदउडू दुवे २ मासाइ चउप्पण्णेणं २ आयाणेणं गणिज्जमाणा साइरेगाइं एगूणसट्ठि २ राइंदियाइं राइंदियग्गेणं आहितेति वएज्जा, तत्थ खलु इमे छ ओमरत्ता पण्णत्ता, तंजहा—तइए पव्वे सत्तमे पव्वे एक्कारसमे पव्वे पण्णरसमे पव्वे एगूणवीसइमे पव्वे तेवीसइमे पव्वे, तत्थ खलु इमे छ अइरत्ता प०, तं०—चउत्थे पव्वे अट्ठमे पव्वे बारसमे पव्वे सोलसमे पव्वे वीसइमे पव्वे चउवीसइमे पव्वे। छच्चेव य अइरत्ता आइच्चाओ हवंति माणाइं। छच्चेव ओमरत्ता चंदाहि हवंति माणाहिं ॥१॥७३॥ तत्थ खलु इमाओ पंच वासिक्कीओ पंच हेमंताओ आउट्टीओ पण्णत्ताओ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता अभीइणा, अभीइस्स पढमसमएणं, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पूसेणं, पूसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णियाभागा सेसा, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता संठाणाहिं, संठाणाणं एक्कारसमुहुत्ते ऊयालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता तेपण्णं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पूसेणं, पूसस्स णं तं चेव जं पढमाए, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता विसाहाहिं, विसाहाणं तेरस मुहुत्ता चउप्पण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता चत्तालीसं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता रेवईहिं, रेवईणं पणवीसं मुहुत्ता बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता बत्तीसं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुव्वाहिं फग्गुणीहिं, पुव्वाफग्गुणीणं बारस मुहुत्ता सत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता तेरस चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव ॥७४॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राणं पढमं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता हत्थेणं, हत्थस्स णं पंच मुहुत्ता पण्णासं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता सट्ठिं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता सयभिसयाहिं, सयभिसयाणं दुण्णि मुहुत्ता अट्ठावीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता छत्तालीसं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पूसेणं, पूसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेयालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थिं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता मूलेणं, मूलस्स छ मुहुत्ता अट्ठावण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता वीसं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता कत्तियाहिं, कत्तियाणं अट्ठारस मुहुत्ता छत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता छ चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ॥७५॥ तत्थ खलु इमे दसविहे जोए पण्णत्ते, तंजहा—वसभाणुजोए वेणुयाणुजोए मंचे मंचाइमंचे छत्ते छत्ताइछत्ते जुयणद्धे घणसंमद्दे पीणिए मंडगप्पुत्ते णामं दसमे, ता एएसि णं पंचण्हं सं वच्छराणं छत्ताइच्छत्तं जोयं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंबुद्दीवस्स २ पाईणपडीणायायाए उदीणदाहिणायायाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणावेत्ता अट्ठावीसइभागं वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहिं कलाहिं दाहिणपुरत्थिमिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते एत्थ णं से चंदे छत्ताइच्छत्तं जोयं जोएइ, उप्पिं चंदो मज्झे णक्खत्ते हेट्ठा आइच्चे, तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता चित्ताहिं०, चरमसमए ॥ ७६ ॥

बारसमं पाहुडं समत्तं ॥१२॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ता कहं ते चंदमसो वड्ढोवड्ढी आहितेति वएज्जा ? ता अट्ठ पंचासीए मुहुत्तसए तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स, ता दोसिणापक्खाओ अंधयारपक्खमयमाणे चंदे चत्तारि बायालसए छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जइ, तंजहा–पढमाए पढमं भागं बिइयाए बिइयं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरिमसमए चंदे रत्ते भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, इयण्णं अमावासा, एत्थ णं पढमे पव्वे अमावासा, ता अंधयारपक्खो, तो णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारे बायाले मुहुत्तसए छायालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जइ, तं०–पढमाए पढमं भागं बिइयाए बिइयं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरिमे समए चंदे विरत्ते भवइ, अवसेससमए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, इयण्णं पुण्णिमासिणी, एत्थ णं दोच्चे पव्वे पुण्णिमासिणी ॥७७॥ तत्थ खलु इमाओ बावट्ठिं पुण्णिमासिणीओ बावट्ठिं अमावासाओ पण्णत्ताओ, बावट्ठिं एए कसिणा रागा, बावट्ठिं एए कसिणा विरागा, एए चउव्वीसे पव्वसए, एए चउव्वीसे कसिणरागविरागसए, जावइया णं पंचण्हं संवच्छराणं समया एगेणं चउव्वीसेणं समयसएणूणगा एवइया परित्ता असंखेज्जा देसरागविरागसया भवंतीति मक्खाया, ता अमावासाओ णं पुण्णिमासिणी चत्तारि बायाले मुहुत्तसए छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वएज्जा, ता पुण्णिमासिणीओ णं अमावासा चत्तारि बायाले मुहुत्तसए छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वएज्जा, ता अमावासाओ णं अमावासा अट्ठपंचासीए मुहुत्तसए तिसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वएज्जा, ता पुण्णिमासिणीओ णं पुण्णिमासिणी अट्ठपंचासीए मुहुत्तसए तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वएज्जा, एस णं एवइए चंदे मासे एस णं एवइए सगले जुगे ॥ ७८ ॥ ता चंदेणं अद्धमासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता चोद्दस चउब्भागमंडलाइं चरइ, एगं च चउव्वीससयभागं मंडलस्स, ता आइच्चेणं अद्धमासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता १४ $\frac{९९}{१२०}$ मंडलाइं चरइ, ता णक्खत्तेणं अद्धमासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता तेरस मंडलाइं चरइ, तेरस सत्तट्ठिभागं मंडलस्स, तया अवराइं खलु दुवे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरइ, कयराइं खलु ताइं दुवे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरइ ? ता इमाइं खलु ते बे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असमण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरइ, तंजहा–णिक्खममाणे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चेव अमावासंतेणं पविसमाणे चेव पुण्णिमासिंतेणं, एयाइं खलु दुवे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरइ, ता पढमायणगए चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, कयराइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ ! इमाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, तंजहा–बिइए अद्धमंडले चउत्थे अद्धमंडले छट्ठे अद्धमंडले अट्ठमे अद्धमंडले दसमे अद्धमंडले बारसमे अद्धमंडले चउदसमे अद्धमंडले, एयाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, ता पढमायणगए चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, कयराइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ ! इमाइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ,तंजहा–तइए अद्धमंडले पंचमे अद्धमंडले सत्तमे अद्धमंडले णवमे अद्धमंडले एक्कारसमे अद्धमंडले तेरसमे अद्धमंडले पण्णरसमस्स अद्धमंडलस्स तेरस सत्तट्ठिभागाइं, एयाइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, एतावता य पढमे चंदायणे समत्ते भवइ, ता णक्खत्ते अद्धमासे णो चंदे अद्धमासे णो चंदे अद्धमासे णक्खत्ते अद्धमासे, ता णक्खत्ताओ अद्धमासाओ से चंदे चंदेणं अद्धमासेणं किमहियं चरइ ? ता एगं अद्धमंडलं चरइ चत्तारि य सट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स सत्तट्ठिभागं एगतीसाए छेत्ता णव भागाइं, ता दोच्चायणगए चंदे पुरत्थिमाए भागाए णिक्खममाणे सचउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरइ, सत्त तेरसगाइं जाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरइ, ता दोच्चायणगए चंदे पच्चत्थिमाए भागाए णिक्खममाणे चउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरइ, तेरसगछाइं० चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरइ, अवरगाइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरइ, कयराइं खलु ताइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरइ ! इमाइं खलु ताइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरइ तं०–सव्व-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ब्भंतरे चेव मंडले सव्वबाहिरे चेव मंडले, एयाइं खलु ताइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ जाव चारं चरइ, एतावता दोच्चे चंदायणे समत्ते भवइ, ता णक्खत्ते मासे णो चंदे मासे चंदे मासे णो णक्खत्ते मासे, ता णक्खत्ते मासे चंदेणं मासेणं किं अहियं चरइ ? ता दो अद्धमंडलाइं चरइ अट्ठ य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसहा छेत्ता अट्ठारस भागाइं, ता तच्चायणगए चंदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिराणंतरस्स पच्चत्थिमिल्लस अद्धमंडलस्स ईयालीसं सत्तट्ठि-भागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरइ, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरइ, तेरस सत्तट्ठिभागाइं चंदे अप्पणो परस्स चिण्णं पडि-चरइ, एतावता बाहिराणंतरे पच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ, ता तच्चायणगए चंदे पुरत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिरतच्चस्स पुरत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स ईयालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरइ, तेरस सत्तट्ठि-भागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरइ, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स चिण्णं पडिचरइ, एतावताव बाहिरतच्चे पुरत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ, ता तच्चायणगए चंदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिरचउत्थस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स अद्धसत्तट्ठिभागाइं च एक्कतीसहा छेत्ता अट्ठारस भागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरइ, एतावताव बाहिरचउत्थपच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ। एवं खलु चंदेणं मासेणं चंदे तेरस चउप्पण्णगाइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरइ, तेरस तेरसगाइं जाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरइ, दुवे ईयालीसगाइं अट्ठ सत्तट्ठिभागाइं सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसहा छेत्ता अट्ठारसभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरइ, अवराइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरइ, इच्चेसो चंदमासोऽभि-गमणणिक्खमणवुड्ढिणिवुड्ढिअणवट्ठियसंठाणसंठिईविउव्वणगिद्धिपत्ते रुवी चंदे देवे २ आहिएति वएज्जा ॥ ७९ ॥ **तेरसमं पाहुडं समत्तं ॥१३॥**

चोद्दसमं पाहुडं

ता कया ते दोसिणा बहू आहितेति वएज्जा ? ता दोसिणापक्खे णं दोसिणा बहू आहितेति वएज्जा, ता कहं ते दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वएज्जा ? ता अंधयारपक्खाओ णं० दोसिणा बहू आहिताति वएज्जा, ता कहं ते अंधयारपक्खाओ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वएज्जा ? ता अंधयारपक्खाओ णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसए छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जइ, तं०—पढमाए पढमं भागं बिइयाए बिइयं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, एवं खलु अंधयारपक्खाओ दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वएज्जा, ता केवइया णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वएज्जा ? ता परित्ता असंखेज्जा भागा । ता कया ते अंधयारे बहू आहिएति वएज्जा ? ता अंधयारपक्खे णं अंधयारे बहू आहिएति वएज्जा, ता कहं ते अंधयारपक्खे० बहू आहिएति वएज्जा ? ता दोसिणापक्खाओ णं अंधयारपक्खे अंधयारे बहू आहिएति वएज्जा, ता कहं ते दोसिणापक्खाओ अंधयारपक्खे अंधयारे बहू आहिएति वएज्जा ? ता दोसिणापक्खाओ णं अंधयारपक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसए बायालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जइ, तं०—पढमाए पढमं भागं बिइयाए बिइयं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, एवं खलु दोसिणापक्खाओ अंधयारपक्खे अंधयारे बहू आहिएति वएज्जा, ता केवइए णं अंधयारपक्खे अंधयारे बहू आहिएति वएज्जा ? ता परित्ता असंखेज्जा भागा ॥८०॥ **चोद्दसमं पाहुडं समत्तं॥ १४॥**

पण्णरसमं पाहुडं

ता कहं ते सिग्घगई वत्थू आहितेति वएज्जा ? ता एएसि णं चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारारूवाणं चंदेहिंतो सूरा सिग्घगई सूरेहिंतो गहा सिग्घगई गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई णक्खत्तेहिंतो तारा० सिग्घगई, सव्वप्पगई चंदा सव्वसिग्घगई तारा०, ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं चंदे केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ? ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तस्स २ मंडलपरिक्खेवस्स सत्तरस अडसट्ठिं भागसए गच्छइ मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउईसएहिं छेत्ता, ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं सूरिए केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ? ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तस्स २ मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस तीसे भागसए गच्छइ मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउईसएहिं छेत्ता, ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं णक्खत्ते केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ? ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तस्स २ मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसे भागसए गच्छइ मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउईसएहिं छेत्ता ॥८१॥ ता जया णं चंदं गइसमावण्णं सूरे गइसमावण्णे भवइ से णं गइमायाए केवइयं विसेसेइ ? ता बावट्ठिभागे विसेसेइ, ता जया णं चंदं गइसमावण्णं णक्खत्ते गइसमावण्णे भवइ से णं गइमायाए केवइयं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विसेसेइ ? ता सत्तट्ठिभागे विसेसेइ, ता जया णं सूरं गइसमावण्णं णक्खत्ते गइसमावण्णे भवइ से णं गइमायाए केवइयं विसेसेइ ? ता पंचभागे विसेसेइ,ता जया णं चंदं गइसमावण्णं अभीईणक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासादेइ पुरत्थिमाए भागाए समासादित्ता णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ जोयं अणुपरियट्टित्ता विप्पजहइ २ त्ता विगयजोई यावि भवइ, ता जया णं चंदं गइसमावण्णं सवणे णक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासादेइ पुरत्थिमाए भागाए समासादेत्ता तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ २ त्ता जोयं अणुपरियट्टइ जो० २ त्ता विप्पजहइ० विगयजोई यावि भवइ,एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं, पण्णरसमुहुत्ताइं तीसइमुहुत्ताइं पणयालीसमुहुत्ताइं भाणियव्वाइं जाव उत्तरासाढा० । ता जया णं चंदं गइसमावण्णं गहे गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासादेइ पुर० २ त्ता चंदेणं सद्धिं जोगं जुंजइ २ त्ता जोगं अणुपरियट्टइ २ त्ता विप्पजहइ० विगयजोई यावि भवइ । ता जया णं सूरं गइसमावण्णं अभीईणक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासादेइ पुर० २ त्ता चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएइ २ त्ता जोयं अणुपरियट्टइ २ त्ता विप्पजहइ०२ त्ता विगयजोई यावि भवइ, एवं अहोरत्ता छ एक्कवीसं मुहुत्ता य तेरस अहोरत्ता बारस मुहुत्ता य वीसं अहोरत्ता तिण्णि मुहुत्ता य सव्वे भाणियव्वा जाव जया णं सूरं गइसमावण्णं उत्तरासाढाणक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासादेइ पुर०२ त्ता वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएइ जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ जो०जोएइ २त्ता विप्पजहइ २त्ता विगयजोई यावि भवइ, ता जया णं सूरं गइसमावण्णं णक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासादेइ पु०२ त्ता सूरेण सद्धिं जोयं जुंजइ २त्ता जोयं अणुपरियट्टइ २ त्ता जाव विगयजोई यावि भवइ ॥ ८२ ॥ ता णक्खत्तेणं मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता तेरस मंडलाइं चरइ तेरस य सत्तट्ठिभागे मंडलस्स, ता णक्खत्तेणं मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ? ता तेरस मंडलाइं चरइ चोत्तालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स, ता णक्खत्तेणं मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ? ता तेरस मंडलाइं चरइ अट्ठसीयालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स, ता चंदेणं मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता चोद्दस चउभागाइं मंडलाइं चरइ एगं च चउव्वीससयभागं मंडलस्स, ता चंदेणं मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ? ता पण्णरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरइ एगं च

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चउवीससयभागं मंडलस्स,ता चंदेणं मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ? ता पण्णरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरइ छच्च चउवीससयभागे मंडलस्स, ता उडुणा मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता चोद्दस मंडलाइं चरइ तीसं च एगट्ठिभागे मंडलस्स, ता उडुणा मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ? ता पण्णरस मंडलाइं चरइ, ता उडुणा मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ? ता पण्णरस मंडलाइं चरइ पंच य बावीससयभागे मंडलस्स, ता आइच्चेणं मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता चोद्दस मंडलाइं चरइ एक्कारसभागे मंडलस्स, ता आइच्चेणं मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ? ता पण्णरस चउभागाहियाइं मंडलाइं चरइ, ता आइच्चेणं मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ? ता पण्णरस चउभागाहियाइं मंडलाइं चरइ पंचर्तसं च चउवीससयभागमंडलाइं चरइ, ता अभिवड्ढिएणं मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता पण्णरस मंडलाइं० तेसीइं छलसीयसयभागे मंडलस्स, ता अभिवड्ढिएणं मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ? ता सोलस मंडलाइं चरइ तिहिं भागेहिं ऊणगाइं दोहिं अडयालेहिं सएहिं मंडलं छेत्ता, ता अभिवड्ढिएणं मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ? ता सोलस मंडलाइं चरइ सीयालीसएहिं भागेहिं अहियाइं चोद्दसहिं अट्ठासीएहिं मंडलं छेत्ता ॥८३॥ ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता एगं अद्धमंडलं चरइ एक्कतीसाए भागेहिं ऊणं णवहिं पण्णरसेहिं अद्धमंडलं छेत्ता, ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं सूरिए कइ मंडलाइं चरइ ? ता एगं अद्धमंडलं चरइ, ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ? ता एगं अद्धमंडलं चरइ दोहिं भागेहिं अहियं सत्तहिं बत्तीसेहिं सएहिं अद्धमंडलं छेत्ता, ता एगमेगं मंडलं चंदे कइहिं अहोरत्तेहिं चरइ ? दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ एक्कतीसाए भागेहिं अहिएहिं चउहिं चोयालेहिं सएहिं राइंदिएहिं छेत्ता, ता एगमेगं मंडलं सूरे कइहिं अहोरत्तेहिं चरइ ? ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ, ता एगमेगं मंडलं णक्खत्ते कइहिं अहोरत्तेहिं चरइ ? ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ दोहिं ऊणेहिं तिहिं सत्तसट्ठेहिं सएहिं राइंदिएहिं छेत्ता, ता जुगेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता अट्ठ चुलसीए मंडलसए चरइ, ता जुगेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ? ता णवपण्णरसमंडलसए चरइ, ता जुगेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ? ता अट्ठारस पणतीसे दुभागमंडलसए चरइ । इच्चेसा मुहुत्तगई रिक्खाइमासराइंदियजुगमंडलप्पविभत्ता सिग्घगई वत्थू आहितेति (वएज्जा) बेमि ॥८४॥ **पण्णरसमं पाहुडं समत्तं ॥१५॥**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ता कहं ते दोसिणालक्खणे आहिएति वएज्जा ? ता चंदलेसाइ य दोसिणाइ य दोसिणाइ य चंदलेसाइ य के अट्ठे किं लक्खणे ?, ता एगट्ठे एगलक्खणे, ता कहं ते सूरलक्खणे आहिएति वएज्जा ? ता सूरलेस्साइ य आयवेइ य आयवेइ य सूरलेस्साइ य के अट्ठे किं लक्खणे ? ता एगट्ठे एगलक्खणे, ता कहं ते छायालक्खणे आहिएति वएज्जा ? ता अंधयारेइ य छायाइ य छायाइ य अंधयारेइ य के अट्ठे किं लक्खणे ? ता एगट्ठे एगलक्खणे ॥८५॥ **सोलसमं पाहुडं समत्तं ॥१६॥**

सत्तरसमं पाहुडं

ता कहं ते चयणोववाया आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०—तत्थ एगे एवमाहंसु—ता अणुसमयमेव चंदिमसूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति० एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुमुहुत्तमेव चंदिमसूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति···२, एवं जहेव हेट्ठा तहेव जाव ता एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुउस्सप्पिणिओसप्पिणिमेव चंदिमसूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति० एगे एवमाहंसु २५, वयं पुण एवं वयामो—ता चंदिमसूरिया णं जोइसिया देवा महिड्ढिया महज्जुइया महाबला महाजसा महासोक्खा महाणुभावा वत्थधरा वरमल्लधरा वरगंधधरा वराभरणधरा अवोच्छित्तिणयट्ठयाए काले अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति० ॥८६॥ **सत्तरसमं पाहुडं समत्तं ॥१७॥**

अट्ठारसमं पाहुडं

ता कहं ते उच्चत्ते आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ प०, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं दिवड्ढं चंदे एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता दो जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं चंदे एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता तिण्णि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धुट्ठाइं चंदे एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—ता चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धपंचमाइं चंदे एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता पंच जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धछट्ठाइं चंदे एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु—ता छ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धसत्तमाइं चंदे एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु—ता सत्त जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धट्ठमाइं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चंदे एगे एवमाहंसु ७,एगे पुण एवमाहंसु–ता अट्ठ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धणवमाइं चंदे एगे एवमाहंसु८,एगे पुण एवमाहंसु–ताणवजोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धदसमाइं चंदे एगे एवमाहंसु९,एगे पुण एवमाहंसु–ता दस जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धएक्कारस चंदे एगे एवमाहंसु१०,एगे पुण एवमाहंसु–ता एक्कारस जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धबारस चंदे···११, एएणं अभिलावेणं णेयव्वं बारस सूरे अद्धतेरस चंदे १२,तेरस सूरे अद्धचोद्दस चंदे १३,चोद्दस सूरे अद्धपण्णरस चंदे १४, पण्णरस सूरे अद्धसोलस चंदे १५, सोलस सूरे अद्धसत्तरस चंदे १६, सत्तरस सूरे अद्धअट्ठारस चंदे १७, अट्ठारस सूरे अद्धएगूणवीसं चंदे १८, एगूणवीसं सूरे अद्धवीसं चंदे १९, वीसं सूरे अद्धएक्कवीसं चंदे २०, एक्कवीसं सूरे अद्धबावीसं चंदे २१, बावीसं सूरे अद्धतेवीसं चंदे २२, तेवीसं सूरे अद्धचउवीसं चंदे २३, चउवीसं सूरे अद्धपणवीसं चंदे एगे एवमाहंसु २४, एगे पुण एवमाहंसु–ता पणवीसं जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धछव्वीसं चंदे एगे एवमाहंसु २५। वयं पुण एवं वयामो–ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउइजोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता हेट्ठिल्ले तारविमाणे चारं चरइ अट्ठजोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता सूरविमाणे चारं चरइ अट्ठअसीए जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता चंदविमाणे चारं चरइ णव जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता उवरिं तारविमाणे चार चरइ, हेट्ठिल्लाओ तारविमाणाओ दसजोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता सूरविमाणे चारं चरइ णउइं जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता चंदविमाणे चारं चरइ दसोत्तरं जोयणसयं उड्ढं उप्पइत्ता उवरिल्ले तारारूवे चारं चरइ, सूरविमाणाओ असीइं जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता चंदविमाणे चारं चरइ जोयणसयं उड्ढं उप्पइत्ता उवरिल्ले तारारूवे चारं चरइ, चंदविमाणाओ णं वीसं जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता उवरिल्ले तारारूवे चारं चरइ,एवामेव सपुव्वावरेणं दसुत्तरजोयणसयं बाहल्ले तिरियमसंखेज्जे जोइसविसए जोइसं चारं चरइ आहितेति वएज्जा ॥८७॥ ता अत्थि णं चंदिमसूरियाणं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि समंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? ता अत्थि, ता कहं ते चंदिमसूरियाणं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि समंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? ता जहा जहा णं तेसि णं देवाणं तवणियमबंभचेराइं उस्सियाइं भवंति तहा तहा णं तेसिं देवाणं एवं भवइ,तंजहा–अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा, ता एवं खलु चंदिमसूरियाणं देवाणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि तहेव जाव उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि॥८८॥ ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स केवइया गहा परिवारो प०, केवइया णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो, केवइया तारा परिवारो पण्णत्तो ? ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स अट्ठासीइगहा परिवारो पण्णत्तो, अट्ठावीसं णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो, छावट्ठिसहस्साइं णव चेव सयाइं पंचुत्तराइं (पंचसयराइं) एगसरीपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं ॥१॥ परिवारो प० ॥८९॥ ता मंदरस्स णं पव्वयस्स केवइयं अबाहाए जोइसे चारं चरइ ? ता एक्कारस एक्कवीसे जोयणसए अबाहाए जोइसे चारं चरइ, ता लोयंताओ णं केवइयं अबाहाए जोइसे प० ? ता एक्कारस एक्कारे जोयणसए अबाहाए जोइसे प० ॥ ९० ॥ ता जंबुद्दीवे णं दीवे कयरे णक्खत्ते सव्वब्भंतरिल्लं चारं चरइ, कयरे णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरइ, कयरे णक्खत्ते सव्वुवरिल्लं चारं चरइ, कयरे णक्खत्ते सव्वहिट्ठिल्लं चारं चरइ ? ता अभीई णक्खत्ते सव्वब्भिंतरिल्लं चारं चरइ, मूले णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरइ, साई णक्खत्ते सव्वुवरिल्लं चारं चरइ, भरणी णक्खत्ते सव्वहेट्ठिल्लं चारं चरइ ॥९१॥ ता चंदविमाणे णं किंसंठिए प० ? ता अद्धकविट्ठगसंठाणसंठिए सव्वफालियामए अब्भुग्गयमूसियपहसिए विविहमणिरयणभत्तिचित्ते जाव पडिरूवे एवं सूरविमाणे गहविमाणे णक्खत्तविमाणे ताराविमाणे। ता चंदविमाणे णं केवइयं आयामविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं केवइयं बाहल्ले प० ? ता छप्पण्णं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं अट्ठावीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते, ता सूरविमाणे णं केवइयं आयामविक्खंभेणं पुच्छा, ता अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं चउव्वीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं प०, ता णक्खत्तविमाणे णं केवइयं पुच्छा, ता कोसं आयामविक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं अद्धकोसं बाहल्लेणं प०, ता ताराविमाणे णं केवइयं पुच्छा, ता अद्धकोसं आयामविक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं पंचधणुसयाइं बाहल्लेणं प०। ता चंदविमाणं णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता सोलस देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं०—पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, दाहिणेणं गयरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, पच्चत्थिमेणं वसहरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, एवं सूरविमाणंपि, ता गहविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठ देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं०–पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, एवं जाव उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं०, ता णक्खत्तविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं०–पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं एक्का देवसाहस्सी परिवहइ, एवं जाव उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं०, ता ताराविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं०–पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं पंच देवसया परिवएंति, एवं जाव उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं० ॥९२॥ ता एएसि णं चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारारूवाणं कयरे २ हिंतो सिग्घगई वा मंदगई वा ? ता चंदेहिंतो सूरा सिग्घगई, सूरेहिंतो गहा सिग्घगई, गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई, णक्खत्तेहिंतो तारा० सिग्घगई, सव्वप्पगई चंदा, सव्वसिग्घगई तारा० । ता एएसि णं चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारारूवाणं कयरे २ हिंतो अप्पिड्ढिया वा महिड्ढिया वा ? ता तारा० हिंतो णक्खत्ता महिड्ढिया, णक्खत्तेहिंतो गहा महिड्ढिया, गहेहिंतो सूरा महिड्ढिया, सूरेहिंतो चंदा महिड्ढिया, सव्वप्पड्ढिया तारा०, सव्वमहिड्ढिया चंदा ॥ ९३ ॥ ता जंबुद्दीवे णं दीवे तारारूवस्स य २ एस णं केवइए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? ता दुविहे अंतरे प०, तं०–वाघाइमे य णिव्वाघाइमे य, तत्थ णं जे से वाघाइमे से णं जहण्णेणं दोण्णि बावट्ठे जोयणसए उक्कोसेणं बारस जोयणसहस्साइं दोण्णि बायाले जोयणसए तारारूवस्स य २ अबाहाए अंतरे पण्णत्ते, तत्थ णं जे से णिव्वाघाइमे से णं जहण्णेणं पंच धणुसयाइं उक्कोसेणं अद्धजोयणं तारारूवस्स य २ अबाहाए अंतरे प० ॥९४॥ ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं०–चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि देवीसाहस्सी परिवारो पण्णत्तो, पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं चत्तारि २ देवीसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेणं सोलस देवीसहस्सा, सेत्तं तुडिए, ता पभू णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे, पभू णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं जोइसिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं महया हयणट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए केवलं परियारणिड्ढीए णो चेव णं मेहुणवत्तियाए । ता सूरस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ प० ? ता चत्तारि अग्गमहिसीओ प०, तंजहा—सूरप्पभा आयवा अच्चिमाला पभंकरा, सेसं जहा चंदस्स णवरं सूरवडेंसए विमाणे जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियाए ॥९५॥ ता जोइसियाणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं अडभागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं, ता जोइसिणीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई प० ? ता जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, ता चंदविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं, ता चंदविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई प० ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, ता सूरविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं, ता सूरविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई प० ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं, ता गहविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई प० ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं, ता गहविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई प० ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं, ता णक्खत्तविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई प० ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं, ता णक्खत्तविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई प० ? ता जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं चउब्भागपलिओवमं, ता ताराविमाणे णं देवाणं पुच्छा, ता जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं चउब्भागपलिओवमं, ता ताराविमाणे णं देवीणं पुच्छा, ता जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं साइरेगअट्ठभागपलिओवमं ॥ ९६ ॥ ता एएसि णं चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारारूवाणं कयरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? ता चंदा य सूरा य एए णं दो वि तुल्ला सव्वत्थोवा, णक्खत्ता संखिज्जगुणा, गहा संखिज्जगुणा, तारा० संखिज्जगुणा ॥९७॥ **अट्ठारसमं पाहुडं समत्तं ॥१८॥**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ता कइ णं चंदिमसूरिया सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति पभावेंति आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ दुवालस पडिवत्तीओ, पण्णत्ताओ, तं०—तत्थेगे एवमाहंसु—ता एगे चंदे एगे सूरे सव्वलोयं ओभासइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ०एगे एवमाहंसु १,एगे पुण एवमाहंसु—ता तिण्णि चंदा तिण्णि सूरा सव्वलोयं ओभासेंति ४···एगे एवमाहंसु २,एगे पुण एवमाहंसु—ता आउट्ठिं चंदा आउट्ठिं सूरा सव्वलोयं ओभासेंति ४···एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—एएणं अभिलावेणं णेयव्वं सत्त चंदा सत्त सूरा दस चंदा दस सूरा बारस चंदा बारस सूरा बायालीसं चंदा २ बावत्तरिं चंदा २ बायालीसं चंदसयं २ बावत्तरं चंदसयं बावत्तरं सूरसयं बायालीसं चंदसहस्सं बायालीसं सूरसहस्सं बावत्तरं चंदसहस्सं बावत्तरं सूरसहस्सं सव्वलोयं ओभासेंति ४···एगे एवमाहंसु १२, वयं पुण एवं वयामो—ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं०, ता जंबुद्दीवे २ केवइया चंदा पभासिंसु वा पभासिंति वा पभासिस्संति वा ? केवइया सूरा तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा ? केवइया णक्खत्ता जोयं जोइंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा ? केवइया गहा चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा ? केवइयाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ? ता जंबुद्दीवे २ दो चंदा पभासेंसु वा ३, दो सूरिया तवइंसु वा ३, छप्पण्णं णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा ३, छावत्तरि गहसयं चारं चरिंसु वा ३, एगं सयसहस्सं तेत्तीसं च सहस्सा णव य सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा ३,"दो चंदा दो सूरा णक्खत्ता खलु हवंति छप्पण्णा! छावत्तरं गहसयं जंबुद्दीवे विचारीणं ॥ १ ॥ एगं च सयसहस्सं तेत्तीसं खलु भवे सहस्साइं। णव य सया पण्णासा तारागणकोडिकीडीणं ॥ २ ॥" ता जंबुद्दीवं णं दीवं लवणे णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ, ता लवणे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ? ता लवणसमुद्दे समचक्कवालसंठिए णो विसमचक्कवालसंठिए, ता लवणसमुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा ? ता दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णरस जोयणसयसहस्साइं एक्कासीयं च सहस्साइं सयं च अद्धालं किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा, ता लवणसमुद्दे केवइयं चंदा पभासेंसु वा ३ ? एवं पुच्छा जाव केवइयाउ तारागणकोडिकोडीओ०सोभिंसु वा ३?, ता लवणे णं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासेंसु वा ३, चत्तारि सूरिया तवइंसु वा ३,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बारस णक्खत्तसयं जोयं जोएंसु वा ३, तिण्णि बावण्णा महग्गहसया चारं चरिंसु वा ३, दो सयसहस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा णव य सया तारागणकोडिकोडीणं० सोभिंसु वा ३ । पण्णरस सयसहस्सा एक्कासीयं सयं च ऊयालं । किंचिविसेसेणूणो लवणोदहिणो परिक्खेवो ॥१॥ चत्तारि चेव चंदा चत्तारि य सूरिया लवणतोए । बारस णक्खत्तसयं गहाण तिण्णेव बावण्णा ॥२॥ दो चेव सयसहस्सा सत्तट्ठिं खलु भवे सहस्साइं । णव य सया लवणजले तारागणकोडिकोडीणं ॥ ३ ॥ ता लवणसमुद्दं० धायईसंडे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए तहेव जाव णो विसमचक्कवालसंठिए, धायईसंडे णं दीवे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा ? ता चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं ईयालीसं जोयणसयसहस्साइं दस य सहस्साइं णव य एगट्ठे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा, धायईसंडे०दीवे केवइया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा तहेव, ता धायईसंडे णं दीवे बारस चंदा पभासेंसु वा ३, बारस सूरिया तवेंसु वा ३, तिण्णि छत्तीसा णक्खत्तसया जोयं जोएंसु वा ३, एगं छप्पण्णं महग्गहसहस्सं चारं चरिंसु वा ३,अट्ठेव सयसहस्सा तिण्णि सहस्साइं सत्त य सयाइं । एगसीपरिवारो तारागणकोडिकोडीओ ॥ १ ॥ सोभं सोभेंसु वा ३–धायईसंडपरिरओ ईयाल दसुत्तरा सयसहस्सा । णव सया य एगट्ठा किंचिविसेसपरिहीणा ॥ १ ॥ चउवीसं ससिरविणो णक्खत्तसया य तिण्णि छत्तीसा । एगं च गहसहस्सं छप्पण्णं धायईसंडे ॥ २ ॥ अट्ठेव सयसहस्सा तिण्णि सहस्साइं सत्त य सयाइं । धायईसंडे दीवे तारागणकोडिकोडीणं ॥ ३ ॥ ता धायईसंडं णं दीवं कालोए णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए जाव णो विसमचक्कवालसंठाणसंठिए, ता कालोए णं समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा ? ता कालोए णं समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते एक्काणउइं जोयणसयसहस्साइं सत्तरिं च सहस्साइं छच्च पंचुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा, ता कालोए णं समुद्दे केवइया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा, ता कालोए समुद्दे बायालीसं चंदा पभासेंसु वा ३, बायालीसं सूरिया तवेंसु वा ३, एक्कारस बावत्तरा णक्खत्तसया जोयं जोइंसु वा ३, तिण्णि सहस्सा छच्च छण्णउया महग्गहसया चारं चरिंसु वा ३, बारस सयसहस्साइं अट्ठावीसं च सहस्साइं णव य सयाइं पण्णासा तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा, " एक्काणउई

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सयराइं सहस्साइं परिरओ तस्स । अहियाइं छच्च पंचुत्तराइं कालोयहिवरस्स ॥ १ ॥ बायालीसं चंदा बायालीसं च दिणयरा दित्ता । कालोयहिंमि एए चरंति संबद्धलेसागा ॥ २ ॥ णक्खत्तसहस्सं एगमेव छावत्तरं च सयमण्णं । छच्च सया छण्णउया महग्गहा तिण्णि य सहस्सा ॥ ३ ॥ अट्ठावीसं कालोयहिंमि बारस य सहस्साइं । णव य सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीणं ॥ ४ ॥" ता कालोयं णं समुद्दं पुक्खरवरे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ, ता पुक्खरवरे णं दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ? ता समचक्कवालसंठिए णो विसमचक्कवालसंठिए, ता पुक्खरवरे णं दीवे केवइयं समचक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं० ? ता सोलस जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं एगा जोयणकोड़ी बाणउइं च सयसहस्साइं अउणावण्णं च सहस्साइं अट्ठचउणउए जोयणसए परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा, ता पुक्खरवरे णं दीवे केवइया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा तहेव, ता चोयालचंदसयं पभासेंसु वा ३, चोत्तालं सूरियाणं सयं तवइंसु वा ३, चत्तारि सहस्साइं बत्तीसं च णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा ३, बारस सहस्साइं छच्च बावत्तरा महग्गहसया चारं चरिंसु वा ३, छण्णउइसयसहस्साइं चोयालीसं सहस्साइं चत्तारि य सयाइं तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभिंसु वा ३, "कोडी बाणउई खलु अउणाणउइं भवे सहस्साइं। अट्ठसया चउणउया य परिरओ पोक्खरवरस्स ॥१॥ चोत्तालं चंदसयं चत्तालं चेव सूरियाण सयं । पोक्खरवरदीवम्मि चरंति एए पभासंता ॥ २ ॥ चत्तारि सहस्साइं छत्तीसं चेव हुंति णक्खत्ता । छच्च सया बावत्तर महग्गहा बारह सहस्सा ॥ ३ ॥ छण्णउइ सयसहस्सा चोत्तालीसं खलु भवे सहस्साइं । चत्तारि य सया खलु तारागणकोडिकोडीणं ॥ ४ ॥" ता पुक्खरवरस्स णं दीवस्स० बहुमज्झदेसभाए माणुसुत्तरे णामं पव्वए वलयागारसंठाणसंठिए जे णं पुक्खरवरं दीवं दुहा विभयमाणे २ चिट्ठइ, तंजहा—अब्भिंतरपुक्खरद्धं च बाहिरपुक्खरद्धं च, ता अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ? ता समचक्कवालसंठिए णो विसमचक्कवालसंठिए, ता अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं एक्का जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दो अउणापण्णे जोयणसए परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा, ता अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं केवइया चंदा पभासेंसु वा ३ केवइया सूरा तविंसु वा ३ पुच्छा, ता बावत्तरिं चंदा पभासिंसु वा ३, बावत्तरिं सूरिया तवइंसु वा ३, दोण्णि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सोला णक्खत्तसहस्सा जोयं जोएंसु वा ३,छ महग्गहसहस्सा तिण्णि य बत्तीसा चारं चरेंसु वा ३, अडयालीससयसहस्सा बावीसं च सहस्सा दोण्णि य सया तारागण-कोडिकोडीणं सोभं सोभिंसु वा ३ । ता समयक्खेत्ते णं केवइयं आयामविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा? ता पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा, ता समयक्खेत्ते णं केवइया चंदा पभा-सेंसु वा ३ पुच्छा तहेव, ता बत्तीसं चंदसयं पभासेंसु वा ३, बत्तीसं सूरियाण सयं तवइंसु वा ३, तिण्णि सहस्सा छच्च छण्णउया णक्खत्तसया जोयं जोएंसु वा ३, एक्कारस सहस्सा छच्च सोलस महग्गहसया चारं चरिंसु वा ३, अट्ठासीइं सयसहस्साइं चत्तालीसं च सहस्सा सत्त य सया तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभिंसु वा ३, अट्ठेव सयसहस्सा अब्भिंतरपुक्खरस्स विक्खंभो । पणयालसयसहस्सा माणुसखेत्तस्स विक्खंभो ॥१॥ कोडी बायालीसं सहस्स दुसया य अउणपण्णासा । माणुसखेत्तपरि-रओ एमेव य पुक्खरद्धस्स ॥२॥ बावत्तरिं च चंदा बावत्तरिमेव दिणयरा दित्ता । पुक्खरवरदीवड्ढे चरंति एए पभासेंता ॥३॥ तिण्णि सया छत्तीसा छच्च सहस्सा महग्ग-हाणं तु । णक्खत्ताणं तु भवे सोलाइं दुवे सहस्साइं ॥४॥ अडयालसयसहस्सा बावीसं खलु भवे सहस्साइं । दो य सय पुक्खरद्धे तारागणकोडिकोडीणं ॥५॥ बत्तीसं चंदसयं बत्तीसं चेव सूरियाण सयं । सयलं माणुसलोयं चरंति एए पभासेंता ॥६॥ एक्कारस य सहस्सा छप्पि य सोला महग्गहाणं तु । छच्च सया छण्णउया णक्खत्ता तिण्णि य सहस्सा ॥७॥ अट्ठासीइ चत्ताइं सयसहस्साइं मणुयलोगंमि । सत्त य सया अणूणा तारा-गणकोडिकोडीणं ॥८॥ एसो तारापिंडो सव्वसमासेण मणुयलोयंमि । बहिया पुण ताराओ जिणेहिं भणिया असंखेज्जा ॥ ९ ॥ एवइयं तारग्गं जं भणियं माणुसंमि लोगंमि । चारं कलंबुयापुप्फसंठियं जोइसं चरइ ॥ १० ॥ रविससिगहणक्खत्ता एवइया आहिया मणुयलोए । जेसिं णामागोत्तं ण पागया पण्णवेहिंति ॥ ११ ॥ छावट्ठिं पिडगाइं चंदाइच्चाण मणुयलोयम्मि । दो चंदा दो सूरा य हुंति एक्केक्कए पिडए ॥१२॥ छावट्ठिं पिडगाइं णक्खत्ताणं तु मणुयलोयम्मि । छप्पण्णं णक्खत्ता हुंति एक्केक्कए पिडए ॥१३॥ छावट्ठिं पिडगाइं महग्गहाणं तु मणुयलोयंमि । छावत्तरं गहसयं होइ एक्केक्कए पिडए ॥ १४ ॥ चत्तारि य पंतीओ चंदाइच्चाण मणुय-लोयम्मि । छावट्ठिं २ च होइ एक्किक्किया पंती ॥१५॥ छप्पण्णं पंतीओ णक्खत्ताणं तु मणुयलोयंमि । छावट्ठिं २ हवंति एक्केक्किया पंती ॥ १६ ॥ छावत्तरं गहाणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पंतिसयं हवइ मणुयलोयंमि । छावट्ठिं २ हवइ य एक्केक्किया पंती ॥ १७ ॥ से मेरुमणुचरंता पयाहिणावत्तमंडला सव्वे । अणवट्ठियजोगेहिं चंदा सूरा गहगणा य ॥ १८ ॥ णक्खत्ततारगाणं अवट्ठिया मंडला मुणेयव्वा । तेवि य पयाहिणा-वत्तमेव मेरुं अणुचरंति ॥ १९ ॥ रयणियरदिणयराणं उड्ढं च अहे व संकमो णत्थि । मंडलसंकमणं पुण सब्भिंतरबाहिरं तिरिए ॥ २० ॥ रयणियरदिणयराणं णक्खत्ताणं महग्गहाणं च । चारविसेसेण भवे सुहदुक्खविही मणुस्साणं ॥ २१ ॥ तेसिं पविसंताणं तावक्खेत्तं तु वड्ढए णियय । तेणेव कमेण पुणो परिहायइ णिक्ख-मंताणं ॥ २२ ॥ तेसिं कलंबुयापुप्फसंठिया हुंति तावखेत्तपहा । अंतो य संकुडा बाहि वित्थडा चंदसूराणं ॥२३ ॥ केणं वड्ढइ चंदो ? परिहाणी केण होइ चंदस्स ? कालो वा जोण्हो वा केणऽणुभावेण चंदस्स ॥२४॥ किण्हं राहुविमाणं णिच्चं चंदेण होइ अविरहियं। चउरंगुलमसंपत्तं हिच्चा चंदस्स तं चरइ ॥२५॥बावट्ठिं २ दिवसे २ उ सुक्कपक्खस्स । जं परिवड्ढइ चंदो खवेइ तं चेव कालेणं ॥२६॥ पण्णरसइभागेण य चंदं पण्णरसमेव तं वरइ । पण्णरसइभागेण य पुणोवि तं चेव वक्कमइ ॥२७॥ एवं वड्ढइ चंदो परिहाणी एव होइ चंदस्स । कालो वा जुण्हो वा एवऽणुभावेण चंदस्स ॥ २८ ॥ अंतो मणुस्सखेत्ते हवंति चारोवगा उ उववण्णा । पंचविहा जोइ-सिया चंदा सूरा गहगणा य ॥ २९ ॥ तेण परं जे सेसा चंदाइच्चगहतारणक्खत्ता । णत्थि गई णवि चारो अवट्ठिया ते मुणेयव्वा ॥ ३० ॥ एवं जंबुद्दीवे दुगुणा लवणे चउग्गुणा हुंति । लावणगा य तिगुणिया ससिसूरा धायईसंडे ॥३१॥ दो चंदा इह दीवे चत्तारि य सायरे लवणतोए । धायइसंडे दीवे बारस चंदा य सूरा य ॥३२॥ धायइसंडप्पभिइसु उद्दिट्ठा तिगुणिया भवे चंदा । आइल्लचंदसहिया अणंतराणंतरे खेत्ते ॥ ३३ ॥ रिक्खग्गहतारग्गं दीवसमुद्दे जहिच्छसी णाउं । तस्ससीहिं तग्गुणियं रिक्खग्गहतारगग्गं तु ॥ ३४ ॥ बहिया उ माणुसणगस्स चंदसूराणऽवट्ठिया जोण्हा । चंदा अभीइजुत्ता सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ३५ ॥ चंदाओ सूरस्स य सूरा चंदस्स अंतरं होइ । पण्णाससहस्साइं तु जोयणाणं अणूणाइं ॥ ३६ ॥ सूरस्स य २ ससिणो २ य अंतरं होइ । बाहिं तु माणुसणगस्स जोयणाणं सयसहस्सं ॥३७॥ सूरंतरिया चंदा चंदंतरिया य दिणयरा दित्ता । चित्तंतरलेसागा सुहलेसा मंदलेसा य ॥ ३८ ॥ अट्ठासीइं च गहा अट्ठावीसं च हुंति णक्खत्ता । एगससीपरिवारो एत्तो ताराण वोच्छामि ॥ ३९ ॥ छावट्ठिसहस्साइं णव चेव सयाइं पंचसयराइं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं ॥४०॥ ता अंतो मणुस्सखेत्ते जे चंदिमसूरिया गहगणणक्खत्ततारारूवा ते णं देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चारट्ठिइया गइरइया गइसमावण्णगा ? ता ते णं देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा णो चारट्ठिइया गइरइया गइसमावण्णगा उड्ढामुहकलंबुयापुप्फसंठाणसंठिएहिं जोयणसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सिएहिं बाहिराहि य वेउव्वियाहिं परिसाहिं महया हयणट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं महया उक्किट्ठसीहणायबोलकलरवेणं अच्छं पव्वयरायं पयाहिणावत्तमंडलचारं मेरुं अणुपरियट्टंति, ता तेसि णं देवाणं जाहे इंदे चयइ से कहमियाणिं पकरेंति ? ता चत्तारि पंच सामाणियदेवा तं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव अण्णे इत्थ इंदे उववण्णे भवइ, ता इंदट्ठाणे णं केवइएणं कालेणं विरहिए पण्णत्ते ? ता जहण्णेणं इक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासे, ता बहिया णं माणुस्सक्खेत्तस्स जे चंदिमसूरियगह जाव तारारूवा ते णं देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारट्ठिइया गइरइया गहसमावण्णगा ? ता ते णं देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा णो चारोववण्णगा चारट्ठिइया णो गइरइया णो गइसमावण्णगा पक्किट्ठगसंठाणसंठिएहिं जोयणसयसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं सयसाहस्सियाहिं बाहिराहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं महया हयणट्टगीयवाइय जाव रवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति, सुहलेसा मंदलेसा मंदायवलेसा चित्तंतरलेसा अण्णोण्णसमोगाढाहिं लेसाहिं कूडा इव ठाणठिया ते पएसे सव्वओ समंता ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति, ता तेसि णं देवाणं जाहे इंदे चयइ से कहमियाणिं पकरेंति ? ता चत्तारि पंच सामाणियदेवा तं ठाणं तहेव जाव छम्मासे ॥ ९८ ॥ ता पुक्खरवरं णं दीवं पुक्खरोदे णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए सव्व जाव चिट्ठइ, ता पुक्खरोदे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिए जाव णो विसमचक्कवालसंठिए, ता पुक्खरोदे णं समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा ? ता संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा, ता पुक्खरोदे णं समुद्दे केवइया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा तहेव, ता पुक्खरोदे णं समुद्दे संखेज्जा चंदा पभासेंसु वा ३ जाव संखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा ३ । एएणं अभिलावेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वरुणवरे दीवे वरुणोदे समुद्दे ४ खीरवरे दीवे खीरवरे समुद्दे ५ घयवरे दीवे घओदे समुद्दे ६ खोयवरे दीवे खोओदे समुद्दे ७ णंदिस्सरे दीवे णंदिस्सरवरे समुद्दे ८ अरुणोदे दीवे अरुणोदे समुद्दे ९ अरुणवरे दीवे अरुणवरे समुद्दे १० अरुणवरोभासे दीवे अरुणवरोभासे समुद्दे ११ कुंडले दीवे कुंडलोदे समुद्दे १२ कुंडलवरे दीवे कुंडलवरोदे समुद्दे १३ कुंडलवरोभासे दीवे कुंडलवरोभासे समुद्दे १४ सव्वेसिं विक्खंभपरिक्खेवो जोइसाइं पुक्खरोदसागरसरिसाइं। ता कुंडलवरोभासण्णं समुद्दं रुयए दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए सव्वओ जाव चिट्ठइ, ता रुयए णं दीवे किं समचक्कवाल जाव णो विसमचक्कवालसंठिए, ता रुयए णं दीवे केवइयं समचक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा ? ता असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा, ता रुयगे णं दीवे केवइया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा, ता रुयगे णं दीवे असंखेज्जा चंदा पभासेंसु वा ३ जाव असंखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा ३, एवं रुयगे समुद्दे रुयगवरे दीवे रुयगवरोदे समुद्दे रुयगवरोभासे दीवे रुयगवरोभासे समुद्दे, एवं तिपडोयारा णेयव्वा जाव सूरे दीवे सूरोदे समुद्दे सूरवरे दीवे सूरवरे समुद्दे सूरवरोभासे दीवे सूरवरोभासे समुद्दे, सव्वेसिं विक्खंभपरिक्खेवजोइसाइं रुयगवरदीवसरिसाइं, ता सूरवरोभासोदण्णं समुद्दं देवे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ जाव णो विसमचक्कवालसंठिए, ता देवे णं दीवे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा ? ता असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा, ता देवे णं दीवे केवइया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा तहेव, ता देवे णं दीवे असंखेज्जा चंदा पभासेंसु वा ३ जाव असंखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ० सोभेंसु वा ३। एवं देवोदे समुद्दे णागे दीवे णागोदे समुद्दे जक्खे दीवे जक्खोदे समुद्दे भूए दीवे भूओदे समुद्दे सयंभुरमणे दीवे सयंभुरमणे समुद्दे सव्वे देवदीवसरिसा ॥ ९९–१००–१०१ ॥ **एगूणवीसइमं पाहुडं समत्तं ॥१९॥**

वीसइमं पाहुडं

ता कहं ते अणुभावे आहिएति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०–तत्थेगे एवमाहंसु–ता चंदिमसूरिया णं णो जीवा अजीवा णो घणा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

झुसिरा णो बादरबोंदिधरा कलेवरा णत्थि णं तेसिं उट्ठाणेइ वा कम्मेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ते णो विज्जुं लवंति णो असणिं लवंति णो थणियं लवंति, अहे य णं बायरे वाउकाए संमुच्छइ अहे य णं बायरे वाउकाए संमुच्छित्ता विज्जुंपि लवंति असणिंपि लवंति थणियंपि लवंति एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता चंदिमसूरिया णं जीवा णो अजीवा घणा णो झुसिरा बादर-बुंदिधरा कलेवरा अत्थि णं तेसिं उट्ठाणेइ वा० ते विज्जुंपि लवंति ३ एगे एवमाहंसु २, वयं पुण एवं वयामो–ता चंदिमसूरिया णं देवा महिड्ढिया जाव महाणुभागा वर-वत्थधरा वरमल्लधरा० वराभरणधारी अवोच्छित्तिणयट्ठयाए अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति० ॥१०२॥ ता कहं ते राहुकम्मे आहिएति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०–तत्थेगे एवमाहंसु–ता अत्थि णं से राहू देवे जे णं चंदं वा सूरं वा गिण्हइ एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता णत्थि णं से राहू देवे जे णं चंदं वा सूरं वा गिण्हइ० २, तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता अत्थि णं से राहू देवे जे णं चंदं वा सूरं वा गिण्हइ, ते एवमाहंसु–ता राहू णं देवे चंदं वा सूरं वा गेण्हमाणे बुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयइ बुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयइ बुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयइ, वामभुयंतेणं गिण्हित्ता वामभुयंतेणं मुयइ वामभुयंतेणं गिण्हित्ता दाहिणभुयंतेणं मुयइ दाहिणभुयंतेणं गिण्हित्ता वामभुयंतेणं मुयइ दाहिणभुयंतेणं गिण्हित्ता दाहिणभुयंतेणं मुयइ, तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता णत्थि णं से राहू देवे जे णं चंदं वा सूरं वा गेण्हइ, ते एवमाहंसु–तत्थ णं इमे पण्णरस कसिणपोग्गला प०, तं०–सिंघाणए जडिलए खरए खयए अंजणे खंजणे सीयले हिमसीयले केलासे अरुणाभे परिऊए णभसूरए कडिलए पिंगलए राहू, ता जया णं एए पण्णरस कसिणा पोग्गला सया चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति तया णं माणुसलोयंसि माणुसा एवं वयंति–एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा गेण्हइ २, ता जया णं एए पण्णरस कसिणा पोग्गला णो सया चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति तया णं माणुसलोयम्मि मणुस्सा एवं वयंति–एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा गेण्हइ०, एए एवमाहंसु, वयं पुण एवं वयामो–ता राहू णं देवे महिड्ढिए० महाणुभावे वरवत्थधरे जाव वराभरणधारी, राहुस्स णं देवस्स णव णामधेज्जा प०, तं०–सिंघाडए जडिलए खरए खेत्तए दद्दूरे मगरे मच्छे कच्छभे किण्हसप्पे, ता राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा प०, तं०–किण्हा णीला लोहिया हालिद्दा सुक्किल्ला, अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे प०, अत्थि णीलए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठावण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि हालिद्दए राहुविमाणे हालिद्दावण्णाभे प०, अत्थि सुक्किल्लए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे प०, ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वेमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेस्सं पुरत्थिमेणं आवरित्ता पच्चत्थिमेणं वीईवयइ तया णं पुरत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेइ पच्चत्थिमेणं राहू, जया णं राहुदेवे आगच्छेमाणे वा गच्छेमाणे वा विउव्वेमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दादिणेणं आवरित्ता उत्तरेणं वीईवयइ तया णं दाहिणेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेइ उत्तरेणं राहू, एएणं अभिलावेणं पच्चत्थिमेणं आवरित्ता पुरत्थिमेणं वीईवयइ उत्तरेणं आवरित्ता दाहिणेणं वीईवयइ जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वेमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणपुरत्थिमेणं आवरित्ता उत्तरपच्चत्थिमेणं वीईवयइ तया णं दाहिणपुरत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेइ उत्तरपच्चत्थिमेणं राहू, जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणपच्चत्थिमेणं आवरित्ता उत्तरपुरत्थिमेणं वीईवयइ तया णं दाहिणपच्चत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेइ उत्तरपुरत्थिमेणं राहू, एएणं अभिलावेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं आवरेत्ता दाहिणपुरत्थिमेणं वीईवयइ, उत्तरपुरत्थिमेणं आवरेत्ता दाहिणपच्चत्थिमेणं वीईवयइ, ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा० चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेमाणे चिट्ठइ (आवरेत्ता वीईवयइ), तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति–एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा गहिए०, ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा० चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता पासेणं वीईवयइ तया णं मणुस्सलोयंमि मणुस्सा वयंति–एवं खलु चंदेण वा सूरेण वा राहुस्स कुच्छी भिण्णा०, ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा···चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता पच्चोसक्कइ तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति–एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा वंते० राहुणा० २, ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा० चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता मज्झंमज्झेणं वीईवयइ तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति० राहुणा चंदे वा सूरे वा वीइयरिए० राहुणा० २, ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे० चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ताणं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं चिट्ठइ तया णं मणुस्सलोयंसि मणुस्सा वयंति० राहुणा चंदे वा घत्थे० राहुणा० २। ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कइविहे णं राहू प० ? ता दुविहे प०, तं०–धुवराहू य पव्वराहू य, तत्थ णं जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए पण्णरसइभागेणं भागं चंदस्स लेसं आवरेमाणे० चिट्ठइ, तं०–पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसमं भागं, चरमे समए चंदे रत्ते भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, तमेव सुक्कपक्खे उवदंसेमाणे २ चिट्ठइ, तं०–पढमाए पढमं भागं जाव चंदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, तत्थ णं जे से पव्वराहू से जहण्णेणं छण्हं मासाणं, उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स ॥ १०३ ॥ ता कहं ते चंदे ससी २ आहिएति वएज्जा ? ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे कंता देवा कंताओ देवीओ कंताइं आसणसयणखंभभंडमत्तोवगरणाइं अप्पणावि य णं चंदे देवे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कंते सुभगे पियदंसणे सुरूवे ता एवं खलु चंदे ससी चंदे ससी आहिएति वएज्जा । ता कहं ते सूरिए आइच्चे सूरे २ आहिएति वएज्जा ? ता सूराइया णं समयाइ वा आवलियाइ वा आणापाणूइ वा थोवेइ वा जाव उस्सप्पिणिओसप्पिणीइ वा, एवं खलु सूरे आइच्चे २ आहिएति वएज्जा ॥ १०४ ॥ ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? ता चंदस्स० चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं०–चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, जहा हेट्ठा तं चेव जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं, एवं सूरस्सवि णेयव्वं, ता चंदिमसूरिया णं जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ? ता से जहाणामए–केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलसमत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलसमत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्तविवाहे अत्थत्थी अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पवसिए से णं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि णियघरं हव्वमागए ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अंतो बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे विचित्तउल्लोयचिल्लियतले बहुसमसुविभत्तभूमिभाए मणिरयणपणासियंधयारे कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि दुहओ उण्णए मज्झोणयगंभीरे सालिंगणवट्टिए पण्णत्तगंडविब्बोयणे सुरम्मे गंगापुलिणवालुयाउद्दालसालिसए सुविरइयरयत्ताणे ओयवियखोमियखोमदुगूलपट्टपडिच्छायणे रत्तंसुयसंवुडे सुरम्मे आईणगरूयबूरणवणीयतूलफासे सुगंधवरकुसुमचुण्णसयणोवयारकलिए ताए तारिसाए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भारियाए सद्धिं सिंगारागारचारुवेसाए संगयगयहसियभणियचिट्ठियसंलावविलासणिउणजुत्तोवयारकुसलाए अणुरत्ताविरत्ताए मणाणुकूलाए एगंतरइपसत्ते अण्णत्थ कच्छइ मणं अकुव्वमाणे इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरिज्जा, ता से णं पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुभवमाणे विहरइ ? उरालं समणाउसो !, ता तस्स णं पुरिसस्स कामभोगेहिंतो एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव वाणमंतराणं देवाणं कामभोगा, वाणमंतराणं देवाणं कामभोगाहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं कामभोगा असुरिंदवज्जियाणं० देवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरकुमाराणं इंदभूयाणं देवाणं कामभोगा, असुरकुमाराणं० देवाणं कामभोगेहिंतो० गहगणणक्खत्ततारारूवाणं कामभोगा, गहगणणक्खत्ततारारूवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव चंदिमसूरियाणं देवाणं कामभोगा, ता एरिसए णं चंदिमसूरिया जोइसिंदा जोइसरायाणो कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥ १०५ ॥ तत्थ खलु इमे अट्ठासीई महग्गहा पण्णत्ता, तं०—इंगालए वियालए लोहियंके सणिच्छरे आहुणिए पाहुणिए कणे कणए कणकणए कणवियाणए १० कणगसंताणे सोमे सहिए आसासणे कज्जोवए कव्वरए अयकरए दुंदुभए संखे संखणाभे २० संखवण्णाभे कंसे कंसणाभे कंसवण्णाभे णीले णीलोभासे रुप्पे रुप्पोभासे भासे भासरासी ३० तिले तिलपुप्फवण्णे दगे दगवण्णे काए बंधे इंदग्गी धूमकेऊ हरी पिंगलए ४० बुहे सुक्के बहस्सई राहू अगत्थी माणवए कामफासे धुरे पमुहे वियडे ५० विसंधी कप्पेल्लए पइल्ले जडियालए अरुणे अग्गिल्लए काले महाकाले सोत्थिए सोवत्थिए ६० वद्धमाणगे पलंबे णिच्चालोए णिच्चुज्जोए सयंपभे ओभासे सेयंकरे खेमंकरे आभंकरे पभंकरे ७० अरए विरए असोगे विसोगे विमले विवत्ते विवत्थे विसाले साले सुव्वए ८० अणियट्टी अणाविए एगजडी दुजडी करकरिए रायग्गले पुप्फकेऊ भावकेऊ ८८ ॥१०६॥ **वीसइमं पाहुडं समत्तं ॥२०॥**

इइ एस पाहुडत्था अभव्वजणहिययदुल्लहा इणमो । उक्कित्तिया भगवया जोइसरायस्स पण्णत्ती ॥१॥ एस गहियावि संता थद्धे गारवियमाणिपडिणीए । अबहुस्सुए ण देया तव्विवरीए भवे देया ॥ २ ॥ सद्धाधिइउट्ठाणुच्छाहकम्मबलवीरियपुरिसकारेहिं । जो सिक्खिओवि संतो अभायणे परिकहेज्जाहि ॥ ३ ॥ सो पवयणकुलगणसंघबाहिरो णाणविणयपरिहीणो । अरहंतथेरगणहरमेरं किर होइ वोलीणो ॥ ४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तम्हा धिइउट्ठाणुच्छाहकम्मबलवीरियसिक्खियं णाणं। धारेयव्वं णियमा णय अविणीएसु दायव्वं ॥५॥ वीरवरस्स भगवओ जरमरणकिलेसदोसरहियस्स। वंदामि विणयपणओ सोक्खुप्पाए रया पाए ॥ ६ ॥ १०७ ॥

॥ चंदपण्णत्ती समत्ता ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूरियपण्णत्ती

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं। तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला णामं णयरी होत्था रिद्धत्थिमिय-समिद्धा पमुइयजणजाणवया जाव पासादीया ४॥ तीसे णं मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए माणिभद्दे णामं चेइए होत्था वण्णओ। तीसे णं मिहिलाए णयरीए जियसत्तू णामं राया होत्था वण्णओ। तस्स णं जियसत्तुस्स रण्णो धारिणी णामं देवी होत्था वण्णओ। तेणं कालेणं तेणं समएणं तम्मि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे, परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया जाव राया जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥१॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउ-रंससंठाणसंठिए वज्जरिसहणारायसंघयणे जाव एवं वयासी–कइ मंडलाइ वच्चइ १, तिरिच्छा किं च गच्छइ २। ओभासइ केवइयं ३, सेयाई किं ते संठिई ४ ॥१॥ कहिं पडिहया लेसा ५, कहिं ते ओयसंठिई ६। के सूरियं वरयए ७, कहं ते उदयसंठिई ८ ॥२॥ कहं कट्ठा पोरिसिच्छाया ९, जोगे किं ते व आहिए १०। किं ते संवच्छराणाई ११, कइ संवच्छराइ य १२ ॥ ३ ॥ कहं चंदमसो वुड्ढी १३, कया ते दोसिणा बहू १४। केइ सिग्घगई वुत्ते १५, कहं दोसिणलक्खणं १५ ॥४॥ चयणोववाय १७ उच्चत्ते १८, सूरिया कइ आहिया १९। अणुभावे के व संवुत्ते २०, एवमेयाइं वीसई ॥५॥२॥ वड्ढोवड्ढी मुहुत्ताणं १, अद्धमंडलसंठिई २। के ते चिण्णं परियरइ ३, अंतरं किं चरंति य ४ ॥६॥ उग्गाहइ केवइयं ५, केवइयं च विकंपइ ६। मंडलाण य संठाणे ७, विक्खंभो ८ अट्ठ पाहुडा ॥७॥ छप्पं च य सत्तेव य अट्ठ तिण्णि य हवंति पडिवत्ती। पढमस्स पाहुडस्स हवंति एयाउ पडिवत्ती ॥८॥३॥ पडिवत्तीओ उदए, तहा अत्थमणेसु य। भियवाए कण्णकला, मुहुत्ताण गईइ य ॥९॥ णिक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगईइ य। चुलसीइसयं पुरिसाणं, तेसिं च पडिवत्तीओ ॥१०॥ उदयम्मि अट्ठ भणिया भेयग्घाए दुवे य पडिवत्ती। चत्तारि मुहुत्तगईए हुंति तइयम्मि पडिवत्ती ॥११॥४॥ आवलिय १ मुहुत्तग्गे २,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एवं भागा य ३ जोगस्सा ४ । कूलाइं ५ पुण्णमासी ६ य, सण्णिवाए ७ य संठिई ८ ॥१२॥ तार(य)ग्गं च ९ णेया य १०, चंदमग्गत्ति ११ यावरे । देवयाण य अज्झयणे १२, मुहुत्ताणं णामया इय १३ ॥१३॥ दिवसा राइ वुत्ता य १४, तिहि १५ गोत्ता १६ भोयणाणि १७ य । आइच्चवार १८ मासा १९ य, पंच संवच्छरा २० इय ॥१४॥ जोइसस्स दाराइं २१, णक्खत्तविजए विय २२ । दसमे पाहुडे एए बावीसं पाहुडपाहुडा ॥१५॥५॥ **एसो कमविसेसो ताव सूरियपण्णत्तीए अवसेसो अपरिसेसो भावियव्वो जहा चंदपण्णत्तीए जाव अंतिमा गाहत्ति ॥**

॥ सूरियपण्णत्ती समत्ता ॥

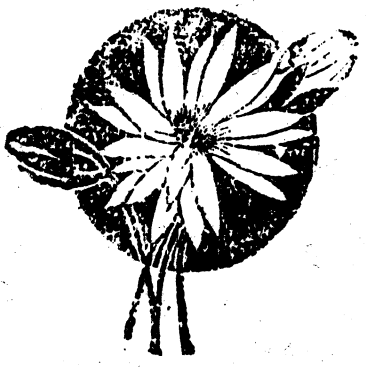

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org